चैतन्य लहरी

हिन्दी नवंबर-दिसंबर २०१४

इस अंक में

शिव का तत्त्व आनन्द का तत्त्व ...४

परमात्मा की प्रेम की शक्ति ...१७

चैतन्य लहरियाँ क्या हैं? ...३२

जिव्हा की शक्ति ...३३

परमात्मा ने क्या-क्या सृष्टि रची है, कितना सुन्दर सारा संसार बनाया है, कितनी सारी चीज़ें हमें दी हैं, अब आप अपनी आत्मा को पा गये हैं, दूसरे की आत्मा को पहचान सकते हैं। कितनी अनंत कृपा परमात्मा की हमारे ऊपर है। बस, यही सोच-सोचकर अपने अन्दर फूलिये। हर जगह उसका आनन्द उठाना शुरू कर दीजिये।

प.पू.श्री माताजी, दिल्ली, ११.३.१९८१

शिव का तत्त्व

आनन्द का तत्त्व

दिल्ली, ९/२/१९९१

कृष्ण ने कहा था 'सर्वधर्माणाम् परित्यज्य मामेकम् शरणम् व्रज' सारे सांसारिक धर्मों को भूल जाओ। यहाँ 'धर्मों' का अर्थ यह नहीं है जैसे हिन्दू, ईसाई, मुस्लिम आदि किन्तु उनका अभिप्राय था जो धारणा अर्थात् समाज रचना का संरक्षण ऐसे धारणाओं को भूल जाओ और मुझे पूर्ण समर्पण दो।

शिवजी के लिए कहा जाता है कि वे बहुत सरल हैं और एकदम भोले हैं। इसलिए उनको जानना बहुत कठिन है। कुण्डलिनी का कार्य ही देवी का कार्य है। देवी ही इस चराचर सृष्टि को बनाती हैं और अन्त में आपके अन्दर कुण्डलिनी बनकर शिव तक पहुँचा देती है। शिव का पूजन करते वक्त याद रखना चाहिए कि शिव के गुणधर्म हमारे अन्दर विकसित हुए या नहीं। इसलिए सबसे पहले कुण्डलिनी की गति को समझ लेना चाहिए। जब कुण्डलिनी का जागरण होता है तो सर्वप्रथम वो आपके शरीर को स्वस्थ करती है। क्योंकि शरीर का भी स्वस्थ होना जरूरी है। इसलिए आपका चित्त पहले अपने शरीर पर जाता है। शुरूआत में सभी मुझे अपनी शारीरिक तकलीफों, बीमारियों के बारे में बताते हैं। कुछ हृष्ट पुष्ट लोग अपनी सांसारिक तकलीफ बताते हैं। जब हम लोग जागृत अवस्था में होते हैं तो हमारा चित्त इन सब चीज़ों की तरफ आकर्षित रहता है और इससे हम लोग काफ़ी तकलीफ में रहते हैं। जैसे जैसे आप सहजयोग में आयेंगे आप यही पायेंगे कि आप लोग अपने शरीर की, सांसारिक चीज़ों की या मानसिक दु:खों की ही चर्चा करते हैं। इसलिए पहले ये व्यवस्था की गई थी कि शरीर की तरफ ध्यान ही नहीं देना चाहिए। उसको कष्ट देना चाहिए। अगर आप पलंग पर सोते हैं तो नीचे उतर कर तख्त पर सोईये। फिर तख्त से आप चटाई पर सोईये। फिर आप जमीन पर सोईये। फिर आप पत्थर पर सोईये। फिर आप दलदल में सोईये। ऐसे अनेक तरह से शरीर को पक्का बनाया जाता था जिससे शरीर बाद में कोई तकलीफ न दे। शरीर का आराम किसी तरह से मान्य न था। जैसे एक रात जागरण में यदि तकलीफ हुई तो सात रात जागरण करो, फिर तकलीफ हुई तो चौबीस रात जागरण करो।

उसी प्रकार खाने-पीने का भी। अगर मनुष्य को खाने की बहुत लालसा है तो आप एक दिन उपवास करो, फिर आप सात दिन उपवास करो, फिर आप चालीस दिन उपवास करो। जो आपको चीज़ पसन्द नहीं हो ऐसी चीज़ आप खाओ। और बाकी सब चीज़ आप छोड़ दो। यहाँ तक कि आप अन्न मत खाओ, सिर्फ फल खाओ, फिर अगर आपको कपड़ों का बहुत शौक है तो आप सादे कपड़े पहनो। फिर आप हल्के कपड़े पहनो। फिर आप हिमालय पर जाओ और वहाँ पूरे कपड़े उतार कर ठण्ड में ठिठराओ। इसी प्रकार किसी को नखरा हो कि मुझे अच्छा घर चाहिए। मैं अच्छे घर के बगैर नहीं रह सकता। जैसे आजकल लोगों को बाथरूम अच्छा चाहिये। आजकल तो सब चीज़ें बहुत ज्यादा आ गयी है। तो उतनी हम लोगों की इच्छायें, प्रवृत्तियाँ बढ़ गयी हैं। तो उधर हमारा चित्त ज्यादा आ गया है। तो कहा जाता था कि अच्छा ठीक है आप बड़े महल में रहते हैं तो अब आप आकर के पहले झोपड़ी में रहो। फिर झोपड़ी में भी बाड़ा लगाते थे। उसमें भी वो अपने को असुरक्षित समझते थे। तो कहा जाता था कि, 'अच्छा, इसमें आप अपने को असुरक्षित समझते हैं, तो ठीक है आप जंगल में आ कर रहो या किसी तीर्थ स्थान में जाओ।' जैसे की कोई निकला तो

कांची का आदमी तीर्थ स्थान में जाएगा तो काशी जाएगा और काशी का जाएगा तीर्थ स्थान में तो कांची जाएगा। रास्ते में उसको शेर खा जायेंगे। शेर ने छोड़ा तो सांप काट लेगा। सांप ने छोड़ा तो मगर खा जायेगा और जब तक वो वहाँ पहुंचते हैं हज़ार में से एकाध आदमी वहाँ पहुँचेगा।

इस तरह से लोगों को छांटते-छांटते और फिर आत्मसाक्षात्कार की बातचीत की जाती थी। सहजयोग में उल्टा हिसाब किताब किया हुआ है। सहजयोग में तो न आपको घर छोड़ना है, न द्वार छोड़ना है, न ही खाना-पीना छोड़ना है, न ही वस्त्र का कोई बन्धन है, आप जैसे हैं ऐसे ही रहें। इसी अवस्था में आपकी कुण्डलिनी जागृत हो जायेगी। कुण्डलिनी इसी स्थिती में जागृत हो जाएगी। पहले तो एक हिरण का चर्म बिछा के उसपे बैठ के, साधना करके फिर आपकी तपश्चर्या होगी। उसके बाद आप बहुत दिन तक भूखे मरियेगा, एकदम आपकी हड्डियाँ निकल आयेगी। तभी फिर परीक्षा होगी, आपको उल्टा टांगा जाएगा। कुएं में डाला जाएगा। दो-तीन बार देखा जाएगा कि किस हालत में आप हैं। उसके बाद अगर आप जिन्दा रह गये तब फिर कहीं जाकर के चर्चा होगी।

अब सहजयोग में उल्टा कारभार है। पहले तो हमने ऊपर का शिखर बना दिया। खोल दिया शिखर, सहस्रार खोल दिया और सहस्रार खोल के अब कहा कि आप ही लोग अपने को ठीक करिये। लेकिन तो भी हम लोग समझ नहीं पाते की सहजयोग बहुत ही कठिन चीज़ है। जितनी सरल है उतनी ही कठिन है, शंकर जी जैसे। क्योंकि हमारे अन्दर अनेक नाड़ियाँ हैं और उन नाड़ियों को खोलने का एक ही तरीका है कि हमारा चित्त जो है वो इधर-उधर न उलझे। तो सहजयोग में ये तो कोई नहीं बताते कि तुम खाना-पीना छोड़ दो। तुम उपवास करो और तुम जाकर हिमालय में ठण्ड में बैठो। ये कोई नहीं बताता। लेकिन क्या करना चाहिए जिससे हमारी प्रगति हो? तो सबसे पहले हमें अपनी तरफ अन्तर्मन करके विचार करना चाहिए कि यह मैं क्या कर रहा हूँ? जैसे कि अब आप कहीं गये और आपने देखा कि आपको सोने की जगह नहीं मिली, तो फौरन आप शिकायत करना शुरू कर देंगे कि, 'माँ हमें सोने की जगह नहीं मिली।' उस वक्त ये सोचना चाहिए कि 'मैं ऐसा क्यों कह रहा हूँ? क्योंकि मैं अपनी शरीर के बारे में चिन्ता कर रहा हूँ कि मुझे सोने की जगह नहीं मिली। मुझे ठीक से जगह नहीं मिली और मैं अपना चित्त इसी में डाले जा रहा हूँ।' अब उस वक्त में ये सोचना चाहिए कि 'अच्छा हुआ कि मुझे जगह नहीं मिली। अब सो जैसे सोना है। अपने शरीर की ओर देखे नहीं। सो अब यहीं सो। यहीं सोना होगा, तू सहजयोगी है। तुझे सोने के लिए अच्छी जगह क्यों चाहिए? दुनिया में कितने लोग हैं जो रास्ते पर सो जाते है। तू कौन बड़ा भारी हो गया कि तुझे सोने के लिए अच्छी जगह चाहिए? और लोग तो खड़े-खड़े भी सो जाते हैं। तू खड़े-खड़े क्यों नहीं सोता और फिर सोना भी क्या जरूरी है। अपने को समझा क्या है तू?' ऐसे अपने शरीर से प्रश्न

पूछना चाहिए।

एकदम आफ़त आ जाये कोई एक बार खाना न खाये तो। मैंने देखा है कि आफ़त आ जाती हैं लोगों पर अगर एक बार खाना न मिले। अगर एक दिन खाना नहीं मिले तो बहुत अच्छा सोचना चाहिए 'अच्छा हो गया। मैं देखता हूँ तुझे क्या होता है तेरा। तू मर जायेगा क्या?' ऐसे शरीर को धिक्कारना चाहिए। खुद ही अपनी तरफ से शरीर को धिक्कारना चाहिए। आजकल तो बहुत ही ज़्यादा शरीर के चोचले निकल आए हैं। जैसे कि ये हमने कपड़ा पहना, तो उसका मैचिंग होना चाहिए। इस तरह की आधुनिक चीज़ें निकल आई हैं और उसके जो परिमाण है वो इतने ज़्यादा कृत्रिम हैं कि हम लोगों को समझ नहीं आता कि हम लोग इस कृत्रिमता के पूरी तरह से गुलाम हुए जा रहे हैं। इसका मतलब ये नहीं कि आप विक्षिप्त हो जायें। इसका मतलब ये नहीं कि आप अजीब से कपड़े पहन कर घूमिये और इसका मतलब ये भी नहीं कि आप हिप्पी हो जाएं। समझ लीजिए कि किसी स्त्री को एक मैचिंग ब्लाऊज नहीं मिला तो उसको तो लगता है कि वो गई काम से, बिल्कुल खत्म। पहले जमाने में कोई मैचिंग पहनता ही नहीं था। अब यदि उसे मैचिंग स्वेटर नहीं मिला तो बस आ गई आफ़त। कौन देखता है आपको कि क्या पहने हैं आप? और आप ऐसी कौन सी विभूति हैं कि आपको देखने से किसी का आज्ञा चक्र खुल जाएगा? या किसी का कोई यंत्र खुल जायेगा? की कोई ऐसी बात हो जाएगी, कुछ भी नहीं। उल्टे आपको देखने से तो कोई पकड़ ही जायेगा आदमी। कभी-कभी तो मैं आँख झुका के चलती हूँ। लोग कहते हैं कि, 'माँ, आप आँख क्यों झुकाते हों?' ठीक है, चलने दो। लेकिन हिम्मत भी करनी पड़ती है कि भई, ये आँख है इसको तो काम करना ही है और इसके काम बहुत है। लेकिन कलियुग में इतना आघात, इतना तो कभी नहीं हुआ।

इसी प्रकार कोई एक भी चीज़ शुरू हो जाए। अब जैसे विलायत में है कि आपके बाल बिल्कुल उलझे होने चाहिए। तो अब सब ऐसे बाल उलझे घूम रहे है। तुम सहजयोगी हो। तुम विशेष लोग हो। तुम ऐसे क्यों कर रहे हो? अपने को पूछना चाहिए कि 'मैं ऐसे क्यों करता हूँ? मैं अपने शरीर का इतना आराम क्यों देखता हूँ? मैं दुनिया के लोगों के साथ अपने को क्यों ऐसे बनाना चाहता हूँ। उसी तरह से मैं क्यों रहना चाहता हूँ। मैं तो एक विशेष हूँ।' पर विशेष कैसे होंगे? अगर आप कहीं गये। तो कमरे में सारे इधर पानी फेंक दिया, हम विशेष हैं। या कहीं भी बैठ के खाना खा लिया, हाथ नहीं धोये, हम विशेष हैं। विशेष का मतलब ये कि आपमें ये जो चित्त की चल-बिचल है उसे रोकना है। चित्त को लीन करना है चैतन्य में। फिर चित्त अगर इधर-उधर जाता रहे तो वो चैतन्य में कैसे लीन होगा?

आपके हृदय में जहाँ शिव जी का वास है वहाँ चार नाड़ियाँ हैं। उसमें से एक नाड़ी मूलाधार तक जाती है और उससे आगे नर्क है। तो कुछ लोग यही कहते हैं कि इसमें क्या खराबी है? लेकिन आप सहजयोगी हैं, आप नर्क काहे को जा रहे हैं? आपका रास्ता बन गया, अब नर्क की ओर क्यों जा रहे हैं? तो अपनी ओर चित्त में ध्यान देना चाहिए कि ये वासना क्यों हैं मेरे अन्दर? क्यों हैं? किसलिए? जो मुझे नर्क की ओर ले जा रहे हैं। मैं तो एक कदम ऊपर रखे हुए हूँ और एक कदम कब्र में रखे हूँ। या तो कब्र में बैठ जाओ या ऊपर ही रह लो। अब चित्त जो है उससे कहना चाहिए कि तू कहाँ भाग रहा है? नर्क की तरफ जाना चाहता है क्या? उसकी दूसरी नाड़ी है, वो नाड़ी हमें इच्छाओं की तरफ ले जाती है। इसलिये बुद्ध ने साफ-साफ कहा था कि कोई भी इच्छा करना यही हमारी मृत्यु का कारण है। इसलिये हम बूढ़े हो जाते हैं और इसलिये हम बीमार पड़ते हैं। क्योंकि हमें इच्छा होती है। इसलिये इच्छा हमारी बिल्कुल खत्म होनी चाहिए। लेकिन वो खत्म नहीं होती। एक शुद्ध इच्छा मात्र रहनी चाहिए। वो कैसे हो? शुद्ध इच्छा इस तरह हो सकती है, कि आप सोचें मुझे इसकी इच्छा क्यों हो रही है? इस इच्छा की ओर मैं क्यों दौड़ा जा रहा हूँ? ऐसी मैंने अनेक इच्छाएं की, उससे मुझे क्या फायदा हुआ? तो जो कुछ भी मिला है उसी में आनन्द पा लेना ही एक सहजयोगी का कर्तव्य है। किसी को इच्छा हुई कि मैं माँ के बिल्कुल सामने जाकर बैठूं या किसी की इच्छा हुई कि हम पहले वहाँ जाकर खड़े हो जायें। ऐसी इच्छा क्यों हुई। क्योंकि अज्ञान में यह नहीं जाना कि माँ हर जगह हैं। कहीं जाने की जरूरत क्या है? तो शुद्ध इच्छा की जब आप इच्छा रखें तो जब कुण्डलिनी चढ़ती है तो ये जो इच्छा की नाड़ी नीचे की तरफ़ मुड़ी हुई है उसकी ऊर्ध्वगति हो जाती है। उसमें शुद्ध इच्छा भर जाती है। इच्छा मनुष्य करता है इस विचार से कि इससे मुझे सुख मिलेगा, आनन्द मिलेगा। पर मिलता कुछ नहीं। तो इस इच्छा को जो है आपको आनन्द में लीन कर देना चाहिए। क्योंकि शिव का तत्त्व जो है, आनन्द का तत्त्व है। उनका स्वभाव आनन्द है। इसलिए हर एक चीज़ में आनन्द खोजना चाहिए। तब किसी चीज़ की त्रुटि ही नहीं लगेगी। दोष देखना या हर एक चीज़ में, ये ऐसा होता तो अच्छा होता, बहुत लोगों की आदत है मैंने देखा। अब रास्ते से जा रहे है, तो कहेंगे कि यहाँ पर उन्होंने फूल क्यों नहीं लगाया? फिर कहेंगे कि यहाँ पर से मार्ग दिखाने का ठीक से क्यों नहीं लगाया? ये रास्ता ऐसे मोड़ पे क्यों नहीं ले आये? अरे बाबा, आप म्युनिसिपाल्टी में हैं? आपको क्या करना है? जो है सो है। आप क्यों बड़बड़ कर रहे हैं? लेकिन दूसरों के बारे में हमेशा कहेंगे। इस में ऐसा करने से ठीक होगा। उसमें ऐसे करने से ठीक होगा। वो जो आप सोच भी रहे हैं वो कार्यान्वित ही नहीं हो सकता। आपका कोई मतलब भी नहीं है उससे।

अब जैसे बहुत से लोगों में होता है, सिनेमा में गये। उसमें कोई सीन दिखा रहे हैं, कि एक आदमी जा रहा है और अब वो किसी पहाड़ी से गिरने वाला है। तो लोग कहेंगे, 'अरे अरे, कहाँ जा

रहे हैं तुम? गिर जाओगे।' अब वो तो सिनेमा में जा रहा है। वो क्या तुम्हारी बात सुन रहा है क्या? उसी तरह से हर एक चीज़ का ठेका लेकर बैठते हैं और इस तरह से अपनी बुद्धि में भी पूरी तरह एक विचारों की शृंखला बना देते हैं। लेकिन जो कुछ आप देखते हैं वो देखना मात्र हो गया। एक कटाक्ष में भी निरीक्षण हो जायेगा और चित्त सा आपके अन्दर बन जाएगा। लेकिन वो देखना नहीं होता। उसे निरंजन देखना कहते हैं। उसमें कोई रंजना नहीं होनी चाहिए। ना उसके प्रति रिअॅक्शन ही नहीं होनी चाहिए। बस देखो, इस रिअॅक्शन का क्या फायदा? वो ही जैसे मैंने बताया कि सिनेमा में कोई आदमी कुछ कर रहा है। तो कह रहे हैं कि तुम ऐसे मत करो। कोई सुन रहा है क्या तुम्हारा? तो निरंजन देखना ये भी शिव का ही तत्त्व है। शिव के स्थान पर भी पहुँच गए और उनके मूर्ति के दर्शन भी हो गए, किन्तु जब तक उनका प्रकाश हमारे अन्दर नहीं आया तो सब व्यर्थ ही है।

अब तीसरी नाड़ी है उसमें प्रेम उभरता है। प्रेम माने मेरा बेटा, मेरी बहन, मेरा भाई, मेरा बाप, मेरा पति सब दुनिया भर की रिश्तेदारी। इसमें भी बहुत लोग उलझे रहते हैं। सहजयोग में आने के बाद भी मैं सालों तक देखती हूँ वो छूटता ही नहीं उनका। वही वही बाते, वही वही बाते। 'मेरे भाई का ऐसा हुआ, तो मेरे बहन का वैसा हुआ, मेरा फलाना ऐसा, मेरा ठिकाना ऐसा। मेरे लड़के ने ऐसा किया, तो लड़की ने ऐसा किया।' अब ये कहना कि ये रिश्तेदारी वृथा है, तो ये तो बात ठीक नहीं। तो ऐसा ममत्व कि अपने बच्चों के लिए आप किसी का मर्डर भी कर दें, किसी को खत्म भी कर दें। कुछ भी कर सकते हैं इस ममत्व के लिए। कोई पत्नी के लिए, कोई प्रेयसी के लिए, तो कोई पति के लिए, इस कदर उसमें आदमी अपने जीवन को व्यर्थ करता है और उसके बाद देखते हैं कि जिनके लिए इतना किया वो ही आपके दुश्मन हैं। वो ही आपको सता रहे हैं। सबसे ज्यादा दु:ख वो ही दे रहे हैं और आपको और भी ज्यादा दु:ख इसलिए होता है कि इन्हीं के लिए हमने इतना किया और इन्होंने हमारे लिए क्या किया? अगर किसी के ऊपर जरा सा उपकार किया और उन्होंने आपको तकलीफ़ दी तो और भी दु:ख लगता है कि, इसके लिए इतना करने पर इसने ये किया। तो पहले जमाने में कहते थे कि सबको त्याग दो। घर त्यागो, बच्चों को त्यागो, बीबी त्यागो, सब छोड़छाड़ के जंगल में जाकर एकांतवास करो। सहजयोग में ऐसा नहीं है। सहजयोग में ये हैं किसी को नहीं त्यागना है। सबको अपनाना है। क्योकि सहजयोग एक व्यक्तिगत कार्य नहीं कि आप जा कर एकान्त में बैठ गए और तपस्या की और बड़े ऊँचे हो गये। तो क्या फ़ायदा हुआ। आप अवधूत बन गये तो क्या फायदा हुआ। एक ऐसा आदमी हो जो अच्छा भाषण दे सकता है। हो सकता है कि थोड़ी बहुत चैतन्य की भी वर्षा कर सकता है। पर उससे सारा संसार तो ठीक नहीं हो सकता। हमें तो सारे संसार को ठीक करना है। तब ये सोचना चाहिए कि मैं क्यों अपनापन सिर्फ थोड़े ही सीमित लोगों में रखता हूँ? अब उसकी भी वजह है।

एक साहब थे, कहने लगे, 'वो मुझे बहुत अच्छे लगते हैं।' मैंने कहा, 'क्यों?' कहने लगे, 'उनके बाल बहुत अच्छे हैं।' तो मैंने कहा कि, 'आपको बाल अच्छे लगते हैं कि वो अच्छे लगते हैं?' फिर कोई कहेंगे कि, 'साहब, वो उनका हमारे साथ बर्ताव बहुत अच्छा है।' कोई अगर मीठी-मीठी बातें करते हैं तो वो अच्छे लगते हैं। कोई अगर ऐसे कपड़े पहनते हैं तो वो अच्छे लगते हैं। फिर 'ये हमारे दिल्ली के रहने वाले हैं।' फिर दिल्ली के बाद होगा कि नहीं भाई दिल्ली में तो रहते हैं पर ये पुराने दिल्ली वाले हैं तो और भी नज़दीक। फिर ये सब्जी मंडी के हैं। फिर सब्जी मंडी में जो हमारा बैल हमने जिससे खरीदा था वो और भी नज़दीक हो गये। और पता नहीं कहाँ तक चलता है। इनका नाई और हमारा नाई एक। और बड़े गले मिलेंगे, वा, वा! फिर तो बंबई वाले हैं, दिल्ली वाले हैं, फलाने हैं, ठिकाने हैं। अरे, आप अब विश्व के नागरिक हो गये। अब कहाँ बंबई, कहाँ दिल्ली और कहाँ मद्रास! ये अगर आपके दिमाग में अभी भी बैठा हुआ है तो अभी आप सहजयोग को समझे नहीं। ये कब होगा? जब आपका ममत्व करुणामय नहीं होता है। करुणा के सागर, दया के सागर। करुणा के सागर में लीन होना चाहिए, तब फिर बराबर समझ में आयेगा कि किसे क्या समझना चाहिए? किस के साथ क्या करना चाहिए? और अछूता कैसे रहना चाहिए?

मैंने बहुत बार उदाहरण दिया है आपको की एक पेड़ में गर पानी छोड़िये तो उसका जो सत्त्व है वो पेड़ के हर शाखा में, हर पत्ते में, हर फूल में, हर फल में जाता है और लौट आता है। और नहीं लौटे तो वो उड़ जाता है। लेकिन अगर वो एक फूल में ही फँस जाये तो वो पेड़ भी मर जायेगा और फूल भी मर जायेगा। तो जिसे निर्वाज्य प्रेम कहते हैं, जो देवी के एक वर्णन में कहा जाता है कि उनका प्रेम निर्वाज्य होता है। और वो जब किसी के लिए कुछ करती हैं तो फिर उन्हें यह नहीं ख्याल रहता कि ये कुछ किया गया या हुआ और उसने ऐसे क्यों किया? ऐसे नहीं करना चाहिए था। हो गया, गया, खत्म। वो चिपकता नहीं दिमाग में। और रात दिन वही गुनगुन नहीं लगी रहती। कोई भी चीज़ में उलझता नहीं मन क्योंकि वो करुणामय हैं। करुणा के सागर में लीन हो गया। और करुणा के सागर में जो लीन हो जाता है वो बस। अब कोई आ गया, उसको कोई तकलीफ है तो इसकी तकलीफ ठीक कर दो। अब वो जा कर बाद में छूरा लेकर भी आये, चाहे कुछ करे, ये विचार नहीं आता। तकलीफ हैं न आप ठीक कर दीजिए। इनको ये परेशानी है न, ठीक कर दीजिये। हालांकि मैं जानती हूँ कि कुछ कुछ परेशानी में कोई अर्थ नहीं है, लेकिन तो भी बहुत गंभीरता से उसको सुनती हूँ कि, 'भाई क्या परेशानी है, बताओ। हाँ, फिर ऐसा है। फलाना है। छोटी-छोटी चीज़ें भी कोई बताये।'

अपने अपने दायरें से लोग मिलते हैं। उनके दायरे में मैं नहीं उतर पाती। अगर वो मेरे दायरे में नहीं उतर पा रहे हैं तो ये उनका दोष नहीं। उनको उतरना चाहिए। उनको इसी दायरे में उतरना चाहिए, जिसे करुणा कहते हैं। करुणा, करुणा के लिए होती है। वो किसी काम से, किसी मतलब से, किसी

रिश्ते से नहीं होती। कोई होगा बड़ा आदमी, कोई होगा छोटा आदमी, कोई होगा रास्ते पर पड़ा हुआ भिखारी, कोई भी हो। करुणा ऐसी चीज़ हैं की वो जैसे की कहीं आपने देखा है की समुद्र है, कहीं भी गड्ढा हो जाये, पानी भर देता है। कहीं भी कोई त्रुटि हो, उसको भर देगा। इस तरह से करुणा का स्वभाव ही है की उसे दिखा की इनको ये तकलीफ हैं, तो अच्छा, चलो इसके आँसू पोंछ दो, उसके आँसू पोंछ दो, उसकी तकलीफ निकाल लो। वो इसलिये नहीं की कुछ उसे माँगना है, लेना है, मतलब नहीं। सिर्फ इसलिये की वो स्वभाव ही है। पानी का स्वभाव, सागर का स्वभाव।

तो वो 'स्व' भाव होने के लिए, स्वभाव शब्द भी कितना सुंदर है। स्व माने आत्मा। आत्मा का भाव। जब वो आत्मा का भाव आपके अन्दर आ जाये सिर्फ करुणा, फिर ये सब चीज़ टूट जायेगी कि दिल्ली रहने वाले, बम्बई रहने वाले, फलाना, ठिकाना, कुछ याद नहीं रहता। उसका महत्त्व नहीं रहता और हर आदमी क्या है वो जरूर आपको याद रहेगा कि ये कौन है? इसको कौनसी तकलीफ है? एकदम देखते ही याद आ जाएगा। नजर आपकी कहाँ गई? नजर अगर यह ढूंढ रही है, कि दिल्ली वाला कौन है, कलकत्ते वाला कौन है। अगर ये नजर आपकी ढूंढ रही है, कि ये करुणा कहाँ बही चली जा रही है। किस की ओर जा रही है भाई? किसकी ओर खींच रही है मुझे। तो पता होगा कि कोई दु:खी आदमी है। कोई साधक बहुत बड़ा साधक होता है। एकदम हृदय खींच जाना चाहिए उस आदमी की तरफ और ये करुणा आपको सुमति भी देती है और स्मृति भी देती है। क्योंकि जितनी निकटता करुणा से आती है, उतनी किसी भी रिश्ते से नहीं आती। ऐसी विशेष चीज़ है करुणा और इस करुणा में अपने को लीन कर लेना। इस ममत्व को लीन कर लेना ही सहजयोग में उन्नति का मार्ग है। क्योंकि मैंने कभी नहीं कहा कि आप अपने बाल-बच्चे छोड़ दो, घर छोड़ दो और घर से निकल के आप अपना जितना पैसा मुझे ला कर दो। घर बेच दो, बीबी को भी बेच दो बच्चों को बेच दो और सब पैसा मुझे दे दो। ऐसे ही कहते हैं न साधु-संत, जो आजकल निकले हैं। लेकिन ये उल्टे हैं। सहजयोग है। आप जैसे भी हों जहाँ भी हों, अन्दर ही अन्दर बढ़ते जाओ। वो अन्दर देखे बगैर तो यह नहीं होगा। तो फिर ये सोचना है कि क्या मैं करुणामय हूँ? किसी को अगर कुछ है और उसे यह कहा इस बार नहीं हो सकता, तो बहुत बुरा मान जाते हैं। माने सारा ममत्व अपने ही बारे में हो। 'मुझे क्या मिलना है? मैं क्या पाऊंगा? मुझे क्या लाभ होगा?' लेकिन ममत्व बाहर नहीं। कौन, किस दशा में, कैसा भी हो करुणा अपना रास्ता खुद ही ढूंढ लेती है बड़ी सुन्दरता से और बड़ा आनन्ददायी है। करुणा का पाना, उसमें बहना और करुणा में अनेक तरह के कार्य होना, आनन्ददायी तो है लेकिन उस आनन्द में लोभ नहीं होता कि ये आनन्द मैं बार-बार पाऊं। उसकी प्रचीति, कॉन्शसनेस नहीं होती। कर दिया, कर दिया। हो गया, हो गया। जैसे संगीत को सुन लिया, मजा आ गया, वहीं खत्म हो गया। उसी तरह से कोई काम है, कर दिया, खत्म। लीन हो जाती है।

अब चौथी जो हमारे अन्दर नाड़ी है वो अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है हृदय में, और वो चौथी नाड़ी कुण्डलिनी के जागरण से ही जागृत होती है और बांयी विशुद्धि से निकल के और मस्तिष्क में जाकर के कमल को खिलाती है। जब हमारा चित्त इन सब चीज़ों में लीन हो जाता है, तो इस कमल में जीव आ जाता है, इसमें शक्ति आ जाती है या ऐसा समझ लीजिए जैसे किसी पौधे में पानी पड़ जाये तो वो जैसे अपने आप बढ़ता है इसी प्रकार ऐसा शुद्ध चित्त जिस मनुष्य का हो जाता है उसके हृदय की कली खिलती है और वो कमल रूप हो कर के सहस्रार में छा जाता है। फिर उसका सौरभ, उसका सुगन्ध चारों ओर फैलता है। और ऐसा मनुष्य एकदम नतमस्तक हो जाता है, एकदम नतमस्तक हो कर के सबके सामने झुका रहता है। कोई अगर कहता है कि आपने बड़ा मेरा काम कर दिया, बड़ा चमत्कार कर दिया, तो वो चीज़ उसे छूती नहीं। जैसे कि आनन्द की लहरें बाहर की ओर तट पे जाकर के नाद करती हैं, किंतु वापस नहीं लौटती। उसी प्रकार जिस मनुष्य की ये स्थिति हो जाती है उसका सारा कार्य बाहर को निनाद करता है। आवाज करता है। उसका असर बाहर दिखाई देता है। तट पर। उसके अन्दर उसका कोई भी परिणाम नहीं आता। ख्याल भी नहीं आता, विचार भी नहीं आता।

अब आप लोग कभी कभी आपने अभी आगत-स्वागत गाना शुरू किया, तो मैंने सोचा किसी और का कर रहे हैं क्या? मैं इधर-उधर देख रही थी। किसके लिये गा रहे हैं? किस का स्वागत कर रहे हैं? मुझे डर लगता हैं कि कभी मैं भी आपके साथ गाने न लग जाऊं। कभी आप लोग मेरा जयजयकार करते हैं तब तो मुझे और भी ज्यादा डर लगता हैं कि मैं भी न कहीं 'जय माताजी' शुरू करूँ। वाकई ऐसे। छूता नहीं। जो भी आप कहते हैं, जो भी आपके निनाद हैं वो और दूसरे तट पर जा कर छू जाएंगे। मेरे तक छूते ही नहीं। मुझे आते ही नहीं। उससे हो सकता है, अन्दर बैठे देवी-देवता खुश हो जायें और चैतन्य को बहायें या कुछ करें। उस तट पर पहुँच सकता है। पर जहाँ तक मेरा सवाल है, मुझे कुछ उसका आभास भी कभी नहीं होता कि आप मेरी जयजयकार गा रहे हैं। मैं शायद वहाँ हूँ ही नहीं। ये दशा है शायद। अभी इतनी पोषक ना हो आप लोगों के लिए। लेकिन एक बात जरूर है की आप जब स्तुति गाते हैं, देवता खुश होते हैं, आपके अन्दर के देवता भी प्रसन्न हो जाते हैं और आपके लिए अनन्त नाड़ियों से कितने तो भी तेज:पुंज ऐसे प्रकाश के किरण आपके अन्दर छोड़ते हैं। फोटोग्राफ्स में देखा होगा आपने। कितनी मेहनत करते हैं आपके लिए। तो आपके लिए भी बहुत आवश्यक है, कि वो जब हमारे लिए इतनी मेहनत कर रहे हैं तो हमें भी इस शुद्धता को पाना चाहिए। तो पहले जिस शरीर को हम धिक्कार रहे हैं, जिसको हम मान नहीं रहे, वो ही शरीर जा कर के एक यज्ञ हो जाता है। यज्ञ माने ऐसे कि अब हमारा शरीर है, हो रही है तकलीफ, तो ये तो तकलीफ होनी ही है, क्योंकि ये यज्ञ है न! अच्छी बात है। जैसे की काष्ठ का जलना यज्ञ में जरूरी है, उसी तरह

इस शरीर का भी जलना यज्ञ में जरूरी है। लेकिन सहजयोग में सबसे बड़ी बात ये हैं कि ये जो कृत युग शुरू हो गया है, आपके पूर्व पुण्य से, आपको बहुत तकलीफ होती नहीं खास! सब चीज़ सामने आ के खड़ी हो जाती है। सब साक्षात्कार होते रहता है। आप कहते हैं चमत्कार हो रहा है। सब चीज़ आपको सुलभ में मिल जाती है। बहुत से काम आपके सरल-सहज हो जाते हैं। शोभना-सुलभ गति

कहा जाता है कि आपके शोभायमान इस तरह के जीवन में अत्यंत सुलभता से आप इसे प्राप्त कर सकते हैं। कोई भी अशुभ काम करने की, अशोभनीय काम करने की जरूरत नहीं। तो ये एक इस तरह की बड़ी सूक्ष्म माया भी है। उसमें यह नहीं सोचना चाहिए कि यह सारे चमत्कार हमारे लिए इसलिये हो रहे हैं क्योंकि हम कोई बड़े भारी सहजयोगी हैं। लेकिन ये सोचना चाहिए कि ये चमत्कार इसलिए हो रहे हैं कि हमारे अन्दर विश्वास-परमात्मा के प्रति, शिव के प्रति और कुण्डलिनी के प्रति दृढ़ हो जायें। इसलिये चमत्कार हो रहे हैं और इसको दृढ़ता से करने का कार्य यही है कि हम अपने चित्त को शुद्ध करें क्योंकि शिव चित्त स्वरूप हैं। उनके चित्त की शक्ति को चिति कहते हैं। वो चित्त हैं। माने कि ये जो चैतन्य चारों तरफ हैं, आप जानते हैं, उस चैतन्य का जो चित्त है, वो शिव का प्रसाद है। जो शिव का तत्त्व है। माने सारे संसार में उनका चित्त फैला हुआ है और जब आप कहते हैं कि चमत्कार हो गया, ये चीज़ घटित हो गई तब ये जान लेना चाहिए कि ये जो चित्त है, जिसे हम चिति कहते हैं, उसने ये कार्य किया है। अणु-रेणु हर चीज़ में उनका चित्त है लेकिन चित्त का मतलब ये होता है कि वो साक्षी है। देख रहे हैं और कार्यान्वित जो है वो ब्रह्म-चैतन्य है। लेकिन जैसे कि संगीतकार आप देखते हैं, वो सामने को देखकर बजाता है। उसी प्रकार ब्रह्म-चैतन्य उस चित्त की दृष्टि को देख कर ही कार्यान्वित होता है। उस सृष्टि को, उस चिति को ब्रह्मचैतन्य जानता है और वो इस कार्य को तब करता है जब उस चिति को देख कर उसे वो ठीक समझता है।

जैसे कि अभी हम आयें। आते ही एक साहब आये थे, देखते ही एकदम हकपका गये। मुझे देखा, मैंने कुछ कहा नहीं, कुछ नहीं। सिर्फ मुझे देख कर के एकदम सकपका गये। उसी प्रकार, वो कुछ कहें या न कहें क्योंकि ब्रह्मचैतन्य ये देवी की शक्ति है और वो कार्यान्वित है और वो उस देखने वाले को जानती है और उस शक्ति की पूरी समय यही लीला है कि उस देखने वाले को खुश रखना है। इसलिये कभी-कभी आप कहते हैं कि माँ ऐसे गड़बड़ क्यों हो गया। इसलिये हो गया कि वो जो चिति थी उसका रुख बदल गया था। अगर आप आज शिव की पूजा कर रहे हैं तो ये मैंने जो चार नाड़ियां बताई हैं उसकी ओर नजर करें। और जिस तरह से मैंने बताया है कि अपने को किस तरह से इन चार चीज़ों में लीन कर लेना चाहिए चित्त को। यह कोई बड़ी गहन बात नहीं है, लेकिन सूक्ष्म है और फिर आप मुझे बताईये कि इस तरह से अन्तर्मन कर के जो आपने अपने साथ विचारणा की है, या तपस्या की है, या जो वार्तालाप किया है और जो अपने चित्त को शुद्ध किया है, उससे आप एकदम शिव के सागर में पूरी तरह से डूब गये हैं। ऐसी दशा आप सब पायें यही मेरी एक शुद्ध इच्छा है।

शुद्ध इच्छा 'एकमात्र' है, वो
ये है कि हमें परमात्मा से
एकाकार होने की एक,
किसी तरह से, ये एक युक्ति
जुट जाए। किसी तरह से ये
काम बन जाए कि हम ये
परमात्मा की जो चारों तरफ
फैली हुई शक्ति है, जिससे
सारा जीवन्त कार्य होता है,
उससे हम एकाकार हो जाएं।
यही हमारी शुद्ध इच्छा है

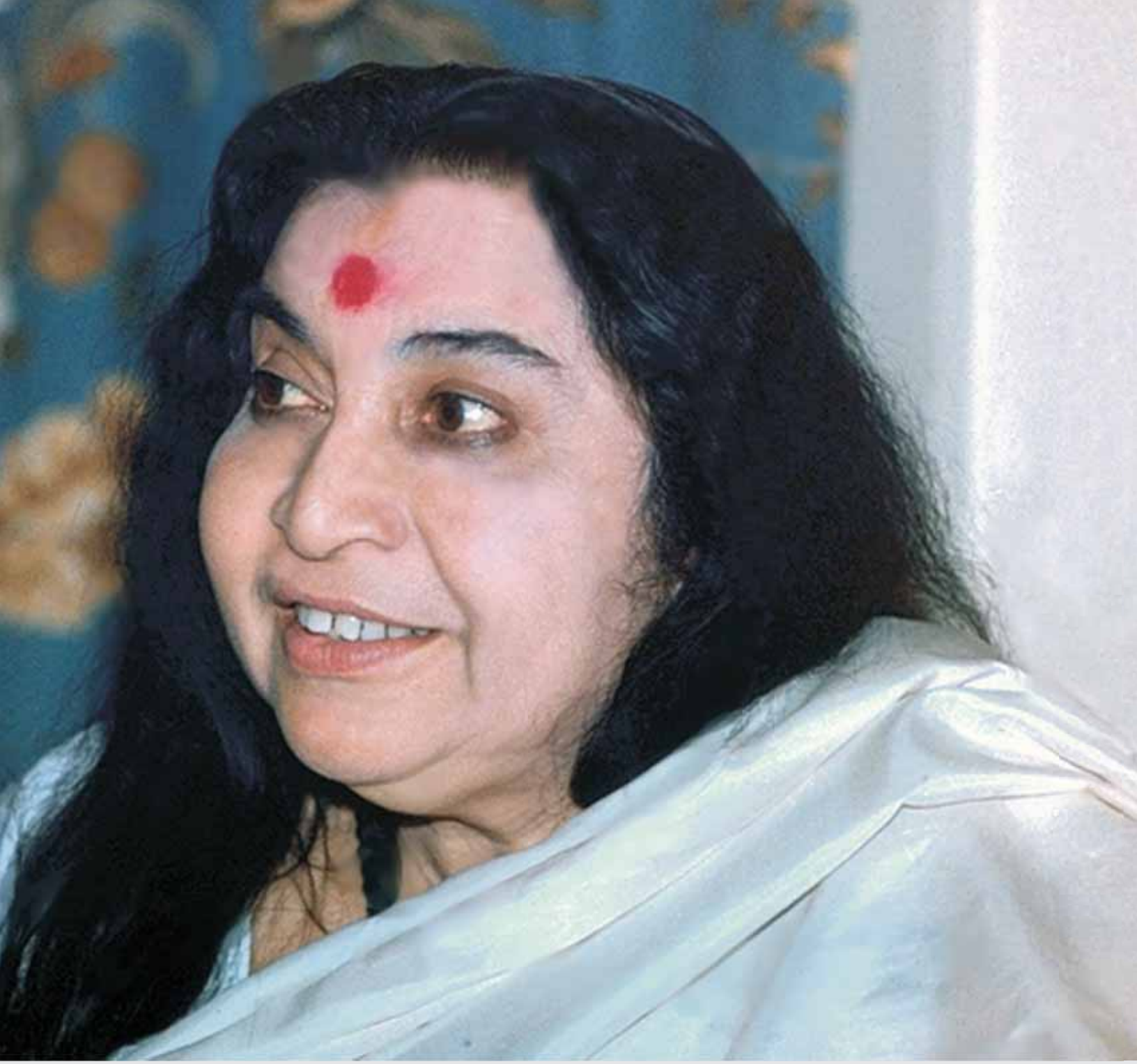

परमात्मा की प्रेम की शक्ति

धर्मशाला, ३१ मार्च १९८५

धर्मशाला के मातृभक्तों को मेरा प्रणाम!

यहाँ के मंदिर की कमेटी ने ये आयोजन किया, जिसके लिए मैं उनका बहुत धन्यवाद मानती हूँ। असल में इतना सत्कार और आनंद, दोनों के मिश्रण से हृदय में इतनी प्रेम की भावना उमड़ आयी है कि वो शब्दों में ढालना मुश्किल हो जाता है। कलियुग में कहा जाता है, कि कोई भी माँ को नहीं मानता। ये कलियुग की पहचान है कि माँ को लोग भूल जाते हैं। लेकिन अब ऐसा कहना चाहिए कि कलियुग का समय बीत गया, जो लोगों ने माँ को स्वीकार किया है।

माँ में और गुरु में एक बड़ा भारी अन्तर मैंने पाया है, कि माँ तो गुरु होती ही है, बच्चों को समझाती है, लेकिन उसमें प्यार घोल-घोल कर इस तरह से समझा देती है कि बच्चा उस प्यार के लिए हर चीज़ करने को तैयार हो जाता है। ये प्यार की शक्ति, जो सारे संसार को आज ताज़गी दे रही है, जो सारे जीवन्त काम कर रही है, जैसे ये पेड़ का होना, उनकी हरियाली, उसके बाद एक पेड़ में से फूल हो जाना और फूल में से फल हो जाना, ये जितने भी कार्य हैं, जो जीवन्त कार्य हैं, ये कौन करता है? ये सब करने वाली जो शक्ति है, वो परमात्मा की प्रेम की शक्ति है। उसी को हम आदिशक्ति कहते हैं।

परमात्मा तो सिर्फ नज़ारा देखते हैं, कि उनकी शक्ति का कार्य कैसे हो रहा है। जब उनको वो कार्य पसन्द नहीं आता तो वो आँख मूँद लेते हैं और सारा नज़ारा भी खत्म हो जाता है। परवाह तो माँ को करनी पड़ती है, कि मेरे बच्चे ठीक से रहें। संसार एक बड़ा सुन्दर आलीशान ऐसा विशेष रूप का आदर्श हो कि जिसे देखकर परमात्मा संतुष्ट हो जाएं, ये पूरा प्रयत्न होता रहता है। लेकिन आप जानते हैं कि हर बार ऐसे प्रयत्न हुए। अनेक अवतार इस संसार में आए और अनेक प्रयत्न हुए। लेकिन मनुष्य की अक्ल उलटी बैठ जाती है। कोई बात उसे बताओ 'नहीं करो', तो वो जरूर वही काम करता है।

अभी आपसे योगी जी ने कहा, कि आप शराब मत पीना, अगर आप माँ के भक्त हो। लेकिन ऐसा कहने से और ज़्यादा ही पीना शुरू कर देंगे। मैंने देखा है, कि बच्चों से कोई चीज़ मना करो, तो वो दोगुना करते हैं, कि क्यों मना किया इसलिए हम करेंगे, अहंकार की वजह से। इसका बेहतर तरीका मैंने सोचा कि इनके अन्दर ज्योत जला दो-चाहे वो टिमटिमाती क्यों न हो। थोड़ी सी ही ज्योत जल जाएगी तो उस ज्योत के प्रकाश में खुद ही देखेंगे कि हमारे अन्दर क्या दोष हैं? अगर समझ लीजिए आप हाथ में साँप पकड़े हैं और कोई कहे कि, 'भई तुम तो रस्सी की जगह साँप पकड़े हो छोड़ दो।' तो कहेंगे कि, 'नहीं, मैं तो इसको पकड़े ही रहूँगा।' वो मनुष्य की बुद्धि हुई ना! लेकिन

उस वक्त अगर कोई उसके सामने ज्योत दिखा दे तो देखे कि साँप है तो उसको अपने आप ही छोड़ दे।

इसलिए आज का हमारा जो सहजयोग है, उसमें आपकी पहले कुण्डलिनी हम जगा देते हैं, चाहे आप कैसे भी हों, कुछ भी आपके तरीके हों, कोई भी आप गलत रास्ते पर हों, कुछ भी करते हों। उसके जगने के बाद फिर आप अपने ही आप ठीक हो जाते हैं। कुछ कहने की माँ को ज़रूरत नहीं पड़ती। क्योंकि आप खुद ही देखते हैं कि ये कैसी चीज़ है।

अब शराब ही की बात देखिए कि विलायत में तो आप जानते हैं, कि लोग हर रोज सुबह-शाम शराब पीते रहते हैं। बहुत ही शराबी लोग हैं। और उनका जीवन भी बड़ा ही अधर्मी है। हम लोग उनसे बहुत ऊँचे किस्म के लोग हैं। हमारे अन्दर माँ-बहन है। हम बहुत धर्म समझते हैं। शराब आप अब पीने लग गये थोड़ी-बहुत, वो दूसरी बात है, बाकी हम लोगों में बहुत धर्म है। उन लोगों को, जब उनको जागृति हो जाती है, तो वो दूसरे ही दिन सब छोड़-छाड़ के खड़े हो जाते हैं। कुछ मैं उनसे कहती नहीं। मैंने शुरू से ही ऐसा रवैया ही नहीं रखा कि कहो कि शराब मत पियो, जुआ मत खेलो, नहीं तो आधे लोग वैसे ही उठ के चले जाएं वहाँ से, आधे से ज़्यादा ही। यहाँ तो कम से कम ये हाल नहीं होगा। इसलिए मैं कहती हूँ, कुछ नहीं, जैसे भी हो बैठे रहो। मुझे तुम्हें जागृति बस देने दो। जागृति देने से उनका अहंकार भी टूटता है और उनके अन्दर जो आदतें बैठी हुई हैं, वो भी टूट जाती हैं। अपने आप वो आदतें छूट जाने से वो समर्थ हो जाते हैं।

असल में बहुत से लोग मन से तो सोचते हैं, कि खराब काम है, लेकिन उसे छोड़ नहीं पाते। उसकी वजह ये है, कि कोई आदत पड़ गयी, तो एक माँ की दृष्टि ये है, कि जब बच्चे को आदत पड़ गयी तो उसको किस तरह से छुड़ानी चाहिए। उसको डाँटने से, फटकारने से, मना करने से तो छूटेगी नहीं। तो किस तरह से? एक माँ सोचती है, कि चलो इसके अन्दर एक दीप क्यों न जला दें। इसके अन्दर अगर दीप जल गया तो उस दीप में ये स्वयं ही देख लेगा कि, 'जो मैं ये कार्य करता रहा हूँ ये मेरे लिए इतना हानिकारक है।' और वो समर्थ हो जाए कि इस हानिकारक चीज़ को वो छोड़ दे, तो फिर कोई सवाल ही नहीं उठता। उसको कुछ कहने की जरूरत नहीं, उससे कोई झगड़ा मोल लेने की जरूरत नहीं। कहते ही साथ वो चीज़ अपने ही आप छूट जाती है। ऐसे ही चीज़ होना चाहिए।

आज हम उस कगार पर पहुँच चुके हैं कि अगर हमें आत्मबोध नहीं हुआ, हमने अगर अपने आत्मा को नहीं जाना, तो हमारा सबका सर्वनाश हो सकता है। ये बात बिल्कुल सही है, क्योंकि कलियुग अब पूरी चरम सीमा में पहुँच गया है। कुछ तो बीमारी से होगा। बहुत से लोग ऐसी-ऐसी बीमारियों में फँस जाएंगे कि उससे बच नहीं पाएंगे। बहुत विध्वंसक चीज़ों से हो सकता है। न जाने

कितनी चीज़ें हमने अपने को नष्ट करने की जोड़ ली है।

हम लोग सोचते हैं परदेस में लोगों के पास पैसा बहुत ज़्यादा है, तो वो बड़े सुखी जीव होंगे। बिल्कुल भी सुखी नहीं हैं, आपसे बहुत दुखी जीव हैं। आपसे बहुत ज़्यादा दुखी हैं। क्योंकि उनके यहाँ न कोई समाज है, न कोई माँ है, न कोई भाई है, न कोई बहन है। आप सोचिए कि आपके पास बहुत सारा धन दे दें और आपसे कहें कि आप अकेले कहीं लटके रहिए, तो आप क्या सुखी रहेंगे? ऐसी उनकी हालत है। इतना पैसा होने पर भी वो सब लोग कोशिश ये करते हैं कि हम आत्महत्या कैसे करें? आपको आश्चर्य होगा। उनके बच्चे ये ही सोचते रहते हैं कि हम कैसे आत्महत्या करें?

तो ये बात हम जो समझते हैं कि पैसा होने से सब हो जाएगा, सो बात नहीं। लेकिन पैसा भी होना चाहिए। उसके लिए भी कुण्डलिनी का जागरण ठीक है, क्योंकि अपने अन्दर देवी, जो लक्ष्मी जी हैं, वो भी बसती हैं। जब हमारी कुण्डलिनी नाभि पर आ जाती है, जब हमारी लक्ष्मी की कुण्डलिनी खुल जाती है, तो हमारे अन्दर वो जागृति आ जाती है, जिससे लक्ष्मी जी का स्वरूप हमारे अन्दर प्रकट हो जाता है।

अब जिन्होंने सोच के लक्ष्मी जी बनायीं वो भी बहुत सोच-समझ के बनायी हैं, कि लक्ष्मी जी जो होती हैं, जो लक्ष्मीपति होता है, वो एक माँ स्वरूप होना चाहिए। आजकल तो जिसके पास पैसा आ जाता है वो तो राक्षस स्वरूप हो जाता है। इसका मतलब पैसा पाना लक्ष्मीपति होना नहीं है। दूसरे उनके एक हाथ में दान है, एक हाथ में आश्रय है, एक हाथ से वो देती हैं और दूसरे हाथ से लोगों को आश्रय देना चाहिए। दूसरे जो दो हाथ हैं, उसके अन्दर कमल के गुलाबी फूल हैं। माने उनका रहन-सहन, उनकी शक्ल-सूरत ऐसी होनी चाहिए जैसे कि कमल का पुष्प हो। और उनके अन्दर वैसी ही विचारधारा होनी चाहिए, वैसा ही स्वागत होना चाहिए जैसा कि एक कमल कांटों वाले भौंरे की अपने यहाँ सोने की व्यवस्था करता है। कोई भी मेहमान उसके घर में आए, उसमें कितने ही कांटे हों तो भी उसकी आवभगत करे, उसको आराम दे, वही लक्ष्मीपति है। वो बिचारी इतनी सीधी-सरल है कि एक कमल ही पर खड़ी है। उसको कोई और चीज़ की जरूरत नहीं। सारे तरफ कीचड़ फैला है उसी में एक कमल के ऊपर खड़ी हुई लक्ष्मी जी, जिनको हम इतना मानते हैं, ऐसी देवी हमारे अन्दर जागृत हो जाती है, और उसके ये सारे लक्षण हमारे अन्दर दिखायी देते हैं।

श्रीकृष्ण ने साफ साफ कहा था कि, 'जब योग होगा तब मैं तुम्हारा क्षेम करूंगा। पहले योग को साधो।' लोग बड़ा-बड़ा भाषण देंगे, जिससे किसी के समझ में भी नहीं आएगा, सब सोचेंगे पता नहीं क्या बक रहे हैं? लेकिन सही बात ये है कि पहले योग को प्राप्त करें। जिसने योग को प्राप्त कर लिया वो समाधान में आ जाता है, उसके सारे प्रश्न अपने आप मिट जाते हैं।

कुण्डलिनी शक्ति जो हमारे अन्दर है, ये हमारी शुद्ध इच्छा है। बाकी जितनी हमारे अन्दर इच्छाएं हैं, जैसे कोई आएगी, कहेगी, 'माँ, मेरा बेटा नहीं।' चलो भई तुम्हारे बेटा हो जाएगा। बेटा हो गया। उसके बाद कहेगी कि, 'माँ, बेटा तो हो गया, अब मुझे नाती चाहिए।' वो भी हो गया। 'अब मुझे घर चाहिए।' घर के बाद 'वो चाहिए', उसके बाद 'वो चाहिए'। इसका कोई अन्त ही नहीं है। इसका मतलब, हमारे अन्दर जो इच्छाएं हैं, वो इच्छाएं शुद्ध नहीं हैं।

शुद्ध इच्छा 'एकमात्र' है, वो ये है कि हमें परमात्मा से एकाकार होने की एक, किसी तरह से, ये एक युक्ति जुट जाए। किसी तरह से ये काम बन जाए कि हम ये परमात्मा की जो चारों तरफ फैली हुई शक्ति है, जिससे सारा जीवन्त कार्य होता है, उससे हम एकाकार हो जाएं। यही हमारी शुद्ध इच्छा है और ये शुद्ध इच्छा की शक्ति ही कुण्डलिनी है और जो आदिशक्ति जो कि परमात्मा की इच्छा है, उसी का ये प्रतिबिम्ब है। वही हमारे अन्दर छाया हुआ है। हमारे हृदय में जो आत्मा है, वो परमात्मा की छाया और जो हमारी कुण्डलिनी त्रिकोणाकार अस्थि में है, वो परमात्मा की इच्छा की प्रतिबिम्ब है। उसकी जो इच्छा, जो आदिशक्ति है, उसकी छाया है, प्रतीक छाया है। इसको अगर आप समझ लें तो फिर आपकी समझ में आ जाएगा कि हम धर्म के नाम में भी कितने भटकाव में घूम रहे हैं। वही आदिशक्ति जो है, वही हमारी माँ है। हम सबकी अलग-अलग माँ है। हमारे अन्दर बसी हुई है। और ये माँ सब को ही वो प्रदान देती है, जो कि कोई भी माँ नहीं दे सकती। क्योंकि ये आदिशक्ति जो है पावन मूर्ति परमात्मा की शक्ति है, जो हमारे अन्दर वो गुण दे देती है, जो परमात्मा को प्रसन्न रखे और हमारे अन्दर वो सामर्थ्य दे देती है, वो शक्ति दे देती है, जो परमात्मा के सामर्थ्य लगते हैं।

जैसे कि अब कोई कहता है कि, 'माँ, मुझे ये प्रश्न है।' अच्छा हमने कहा तुम घर जाओ, ठीक हो जाएगा। घर जाते ही देखता है, कि प्रश्न तो ठीक हो गया। माँ ने क्या चमत्कार कर दिया। कुछ चमत्कार मैंने किया नहीं। कोई बात मैंने की नहीं। क्या हुआ? कि आपकी कुण्डलिनी मैंने जागरण कर दी।

कुण्डलिनी जो है, वो किसी भी कारण और परिणाम से परे चीज़ है। कोई है, किसी से पूछा, भई, तुमको क्या परेशानी है? 'हमारे पास पैसा नहीं इसलिए हम परेशान हैं।' यही न? कारण ये है कि पैसा नहीं है और इसलिए आप परेशान हैं। लेकिन समझ लो आप कारण से परे ही चले जाएं, तो कारण भी खत्म हो गया और उसका परिणाम भी खत्म हो गया। यही चीज़ होती है, जब हमें शारीरिक आधि-व्याधि रहती है। जब हमारे अन्दर शारीरिक आधि-व्याधि रहती है, तो हम सोचते हैं कि, 'इसलिए हमें जुकाम हो गया क्योंकि हम सर्दी में गये थे।' अच्छा! लेकिन ऐसी भी कोई दशा होगी कि जहाँ जुकाम ही नहीं होता। 'हमें इसलिए कैन्सर हो गया क्योंकि हमने ये गलत काम

किया।' या 'हमें इसलिए ये बीमारी हो गई क्योंकि हमने ये बदपरहेजी करी।' लेकिन कोई ऐसा भी स्थान होगा जहाँ ये चीज़ होती ही नहीं। जहाँ आप गलती ही नहीं कर सकते, या जहाँ ये कारण ही नहीं बसते। इसको मेडिकल साइंस (चिकित्सा शास्त्र) में मध्य नाड़ी जाल (पैरासिम्पथैटिक नर्वस सिस्टीम) कहते हैं। लेकिन डॉक्टर लोग इसको समझने के लिए पहले सहजयोग को समझ लें, तब उसको समझ पाएंगे।

लेकिन आप लोग इसको बहुत आसानी से समझ सकते हैं। जिसे लोग चमत्कार कहते हैं कोई चमत्कार नहीं है। इसमें कोई चमत्कार नहीं है। हम तो रोज के चमत्कार को चमत्कार नहीं समझते। बताइये कि एक फूल से फल बनता है, तो हम क्या बना सकते हैं? नहीं बना सकते और ऐसे हज़ारों, करोड़ों हम बनते देखते हैं, हमको कोई भी चमत्कार नहीं लगता। एक पहाड़ी का बच्चा पहाड़ी होता है। एक देसी का बच्चा देसी होता है। शक्ल-सूरत वैसी बनी रहती है, कौन बनाता है? ये सोचिये, इसका चयन कौन करता है? ये किस तरह से बारीक से बारीक चीज़ें हज़ारों करोड़ों ऐसी चीज़ें संसार में होती हैं। वो जो शक्ति ये कार्य करती है, जब वो हमारे अन्दर बहने लग जाए तो फिर क्या हम समर्थ हो ही जाएंगे, हम शक्तिवान हो जाएंगे, शक्तिशाली हो जाएंगे।

इन पहाड़ों में देवी का स्थान है। आप जानते हैं कि आज रामनवमी का शुभ अवसर है। इस शुभ अवसर पर ही आप से मिलना था। कोई तो भी ऐसी ही विशेष बात होगी, जहाँ पर कि मुझे यहाँ आज ही आना था। यहाँ सात देवियों का स्थान है। सात देवियाँ अनेक बार आईं। उन्होंने आकर के युद्ध किये यहाँ। बहुत राक्षसों को मारा। बहुत दुष्टों को मारा।

आज भी मैं देखती हूँ, कि यहाँ बहुत से लोग तांत्रिक बनके और गुरु बनके और झूठ-मूठ करके घूम रहे हैं। उसके पीछे में आप लोग लग जाते हैं। वो लोग काली विद्या करते हैं। आप उस परेशानी में फँस जाते हैं। झूठ-मूठ के लोगों के पीछे में लग करके आपने अपना काफ़ी नाश कर लिया। आप डाक्टर लोगों के पास जाइये, तो कहेंगे कि आपको कोई बीमारी ही नहीं है। लगता ही नहीं कि आपको कोई बीमारी है। लेकिन कमजोर आप हुए चले जा रहे हैं। घर में रोज कलह हो रहा है, झगड़ा हो रहा है। कुछ समझ नहीं आता है, बच्चों का मन पढ़ने में नहीं लगता है, चंचलता आ गई। सारी परेशानी कहाँ से आई? सब इन तांत्रिकों के पीछे लगने से। इन झूठे गुरूओं के पीछे लगने से।

आपको पता होना चाहिए कि परमात्मा को पैसा-वैसा कुछ समझ में नहीं आता है। अब ये जमीन है, इस जमीन को आप कहें कि 'मैं तुम्हें दो पैसा देती हूँ, तो मेरा इतना काम कर दे।' उसको समझ में आएगा! आप उसमें एक बीज डाल दीजिए अपने आप उसमें वृक्ष आ जाएगा। अंकुर आ जाएगा। उसके लिए कोई आपको वो जमीन के लिए कुछ मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। सिर्फ ये है की

उसकी अपनी शक्ति है। उस शक्ति में जब बीज पड़ गया, तो अपने आप पनप गया। लेकिन आप ये सोचते हैं कि हम ये करें, वो करें, इसे करने से, उसे करने से भगवान खुश हो जाएंगे। ये बिल्कुल बात नहीं।

सिर्फ आपका परमात्मा में पूर्ण विश्वास और भक्ति होनी चाहिए। और ये जानना चाहिए कि परमात्मा हैं। चाहे आप माने या न माने, परामात्मा ये चीज़ है जो इतने 'हज़ारो' तरह के कार्य संसार में करते हैं। वो परमात्मा जरूर हैं। लेकिन उनको अभी तक आपने जाना नहीं। माँ को देखे बगैर ही, जाने बगैर ही इतनी आपके अन्दर भक्ति है, तो क्या आपको माँ मिलेगी नहीं? ऐसे कैसे हो सकता है? क्या माँ के अन्दर हृदय नहीं है? क्या माँ नहीं सोचती कि मेरे बच्चे मुझे याद कर रहे हैं? तो उनके पास जाना ही होगा। ऐसा तो कोई नहीं सोच सकता कि कोई माँ को बुलावे और माँ न आए।

लेकिन दोष कभी-कभी ऐसा हो जाता है, समय समय का, कि मनुष्य गलत रास्ते पर चला जाता है। गलत रास्ते पर जाने पर वो कार्य नहीं बनता है। लेकिन जब समय आ जाता है, तो जरूरी है, कि जो आपने चाहा अपनी भक्ति में वो फलित होना ही है। और ये कार्य आप लोगों की कुण्डलिनी के जागरण के बाद जरूरी से करना है।

पहले तो बात ये है कि कोई भी तांत्रिक के पास जाने की जरूरत नहीं। यही आज का मर्दन है। आज के राक्षसों का मर्दन यही है, कि सारे तांत्रिकों और सारे गुरुओं के पीछे मैं हाथ धोकर लगी हूँ।

१९७० साल में मैंने खुले आम बम्बई में इन सब राक्षसों के नाम बताए थे कि सबने जन्म लिया हुआ है। इनसे बचकर रहें। एक-एक राक्षस चण्ड-मुण्ड, सबने जन्म ले रखा हुआ है। और सारे गुरुओं के रूप में घूम रहे हैं और उनके पीछे हजारों पागल हैं।

जाने दीजिए, इन बेवकूफ लोगों को उनके पीछे जाने दीजिए। लेकिन जो अच्छे भले लोग हैं, जो सीधे-सादे, सरल हृदय के लोग हैं, वो भी ऐसे चक्करों में फँस जाते हैं और उनके घरों में कलह, उनके शरीर में क्लेश, आदि कितनी तकलीफें होती हैं। इसलिए इस चक्कर में बिल्कुल नहीं पड़ना चाहिए। कोई तांत्रिक आए, आपके यहाँ हाथ में डोरा बांधे, आप उसको कहना, 'माफ करिए, मुझे डोरा नहीं बांधने का।' बहुत से लोग काशी से गंडा ले आते हैं। एक कौड़ी का कहीं से उठा लाए और कहे काशी का गंडा है, बांधो इसे। काशी का गंडा आप बांध रहे हैं। उसका आपने दो रुपया ले लिया। अब आपने बाँध लिया, लेकिन आप क्या जानते हैं, उसके अन्दर कोई चीज़ बंधी हुई है, जो आपको पकड़ लेगी। ये न तो डाक्टर पहचान सकता है, न कोई हकीम पहचान सकता है, न कोई वैद्य पहचान सकता है। ये तो वही पहचान सकता है कि जिसको आत्मबोध हो गया है। वो बता देगा आपको कि आप में पकड़ आ गयी है।

और इस तरह की चीज़ें यहाँ पर बहुत हैं, मैंने आते ही साथ कहा कि अभी रात भर तो मुझे लड़ना है, सबके साथ यहाँ पर, रात भर युद्ध होगा। तीन दिन से रात भर युद्ध हो रहा है। और यहाँ ऐसी बहुत सी गंदी, मैली विद्यायें करने वाले लोग छिपे बैठे हुए हैं और वो गाँव में आकर के औरतों पर या आदमियों पर नज़र डाल कर और उनसे रुपया समेट रहे हैं। कोई कहेगा 'मुझे सिर्फ चावल दे दीजिए, मुझे और कुछ नहीं चाहिए। मुझे ये चीज़ दे दीजिए, मुझे कुछ नहीं चाहिए।' कभी भी आपने सुना है, कि राम ने या कृष्ण ने किसी से भीख माँगी थी कि तुम मुझे चावल दे दो? या गंडे बांधे थे? या किसी से कहा था कि तुम ये नाम ले लो भगवान का, तो तुम्हारा सब ठीक हो जायेगा? हमें नासमझी है, लेकिन नासमझी इतनी हद तक नहीं गुजरनी चाहिए कि हम भगवान में और शैतान में फर्क ही न कर सकें। हम ये भी न पहचान सकें कि ये शैतान है, ये तो राक्षस है। ये तो हमारे लिए एक बड़ा भारी दुष्ट आया हुआ है। हमारा मर्दन काल आया हुआ है, उसको न पहचाने और हम भगवान को न पहचाने। शक्ल-सूरत से आप पहचान सकते हैं, कि ये राक्षसी आदमी है। उसके तौर-तरीके से आप पहचान सकते हैं। क्योंकि आप इस वातावरण में रहते, आपके अन्दर संवेदना है, आप समझ सकते हैं कि ये तो शैतान लगता है, ये आदमी ठीक नहीं। उनके साथ बहू-बेटियाँ बैठेंगी, तो नुकसान पाएंगी। उनके साथ आदमी बैठेंगे, तो नुकसान पाएंगे। कभी भी आपके घर में तरक्की नहीं आएगी। ये सबसे बड़ी चीज़ यहाँ पर है और इसलिए देवियाँ यहाँ पर हमेशा जन्म लेती रहीं।

लेकिन अब कलियुग में जो खराबी आ गयी तो ये है कि राक्षस ऐसे सामने खड़े हों तो उनकी गर्दनें काट के फिकवा दें। लेकिन वो तो ऐसे सामने खड़े नहीं है, सबके दिमाग में घुसे हुए हैं। सारे भक्तों के दिमाग में, बच्चों के दिमाग में अगर राक्षस घुस जाएं तो माँ का क्या हाल होगा, ये सोच लो। आप ही सोचिए। क्या आप एक माँ हैं या बाप हैं। आप कितने परेशान हो जाएं? और ये ही आज दशा मैं देखती हूँ लोगों की,

कि सादे, भोले, अच्छे लोगों पर ये चीज़ बड़ी छाती है। ये शौक आप छोड़ दीजिए। किसी गुरुओं के पास जाना, तांत्रिक के पास जाना, मांत्रिक के पास जाना, ज्योतिषी के पास जाना, ये सब चीज़ों को आप छोड़ दीजिए। अगर इसको आप छोड़ दें, तो आप सीधे ही परमात्मा के साम्राज्य में जा सकते हैं। कोई परेशानी नहीं होगी।

ये जो इस देश में रहने वाले लोग हैं, खास कर जो परदेश में रहने वाले लोग हैं, इनमें से कितने जाएंगे भगवान के दरबार में? बहुत कम। इनको तो माँ के दरबार में आने की हिम्मत ही नहीं होने वाली। उसके लायक ही नहीं है। उसके योग्य ही नहीं हैं। उनका कुछ भी नहीं भला होने वाला। मैं आपसे बता रही हूँ। हालांकि मैं परदेश में मेरे पति हैं, वहाँ रहती हूँ इतने सालों से मेहनत कर रही हूँ, सब बेकार। आप लोग मेरे अपने हैं। आप लोग मेरे जान के प्यारे हो। लेकिन आप लोग भी ऐसे गलतफहमी में फँसे हुए, इधर-उधर भटक गये हैं, तो एक माँ के लिए कितनी आर्तता और कितनी परेशानी की बात है। ये सोच लेना चाहिए कि माँ ने कहा है, कि किसी तांत्रिक, किसी गुरु, किसी घंटाल के पास जाने की जरूरत नहीं। हम लोग गृहस्थी के लोग हैं। गृहस्थी के लोगों को गृहस्थी से सम्बन्ध रखना चाहिए। हमारा साधु-संन्यासियों से कोई मतलब नहीं। हम लोग कमाएं, हम यज्ञ कर रहे हैं, हम गृहस्थी में बैठे हुए हैं। क्या हमें चाहिए कि हमारा पैसा उठा के इन साधु संन्यासियों को दें? कोई जरूरत नहीं। एक बार सीता जी तक साधु-संन्यासी से फँस गयी थी और आप जानते हैं बेचारी को सारा रामायण उसके बाद रच गया। इसलिए इस चक्करों में बिल्कुल नहीं आने का। आप खास कर औरतों पर इनका ज़्यादा असर आता है क्योंकि और ज़्यादा सीदी सादी होती हैं। अपने बच्चों को, अपने घर को, अपने पति को इससे बचा कर रखिए।

हमारे यहाँ की समाज व्यवस्था अत्यन्त सुन्दर है। आप नहीं जानते बाह्य में क्या है। कोई मर जाए तो पूछने वाला नहीं। वहाँ किसी को पता ही नहीं चलता कि कोई मर गया। बाप मर गया तो भी बच्चों को नहीं पता चलता। बच्चे मर गये तो बाप को पता नहीं चलता। उस लंदन शहर में एक हप्ते में तीन बच्चे, चार बच्चे माँ बाप मार डालते हैं। क्यों मारते हैं? क्योंकि तंग आ गये। आप सोचिये कि कम से कम दो बच्चे तो मार ही डालते हैं। आपने कहीं सुना है, किसी माँ को, बाप को, अपने देश में, चाहे दस बच्चे हो जाएं, वो पकड़ के मारता है? इतनी जालिम उनकी आदत है और हम लोग इतने सहज सरल प्रेम के लोग हैं। हमको इस चक्कर में बस नहीं फँसना चाहिए।

बाकी आपको मैं जागृति आज दे दूँगी। आप लोग पार हो जाएं। एक बार आत्मबोध होने के बाद आपके हाथ में से चैतन्य की लहरियाँ शुरू हो जाएंगी। आपके नस-नस में ये चीज़ बहनी चाहिए। ये नहीं कि कोई बता दे आप पार हो गए। आपके सर में से कुण्डलिनी का जो ब्रह्मरंध्र है, छेद कर के वहाँ से ठंडी हवा आयेगी। यहाँ से ठंडी हवा आ जाएगी। आप देखेंगे कि आपके सर में से ठंडी हवा निकल रही है। हाथ में से ठंडी हवा आएगी।

और आप गाते भी हैं कि ठंडी हवा आयी और चांदी के पत्ते हिलने लग गये और देवी आयी।

आपने गाना भी गाया। हमसे योगी महाजन पूछ रहे थे कि, 'माँ, इनको कैसे पता कि ठंडी हवा आती है, जब देवी आती है? इनको कैसे पता चला?' ये तो, मैंने कहा, कि आदि काल से चला आ रहा है। देवी तो यहाँ अनेक वर्षों से है। तो जिन लोगों ने गाया होगा, पहले बताया होगा कि जब देवी आती है, तब उनसे ठंडी हवा आती हैं। तो आदि शंकराचार्य ने वर्णन किया है कि 'सलिलम् सलिलम्' हाथ से ऐसी ठंडी-ठंडी हवा आनी आनी चाहिए। ये देवी की पहचान है। जिसके बदन में ठंडी-ठंडी हवा आए वही अवतार है। ये देवी की पहचान है। ये इन्होंने कहा था। लेकिन हमारे गाँव में जो परम्परा से चले आ रहे हैं, उन्होंने देखा है कि जब देवी का अवतरण होता है तो सब जगह ठंडी हवा आती है। उनके बदन से ठंडी हवा आती है। इसलिए ये ऐसे-ऐसे गाने बने हुए हैं। ये पारम्परिक जो गाने बने हुए हैं, इसके अन्दर बड़ी खूबी से सारी बातें लिखी हुई हैं, कि देवी क्या चीज़ है और देवी को कैसे पहचानना चाहिए।

तो इस तरह से आप लोगों के पास तो बड़ी सम्पदा है, बड़ी आपके पास में सूझ-बूझ है, समझ है और आप सीधे-साधे सरल स्वभाव के लोग हैं। जो कठिन स्वभाव के लोग हैं वो बड़े मुश्किल नहीं। लेकिन एक ही वचन देना है कि ये गुरु घंटालों को आप छोड़ देंगी और इसके आगे पीछे नहीं जाएंगी। उससे बड़े नुकसान आपने उठाये हैं और उठायेंगी। इसलिए पहले सबसे पहले आप लोग सब जागृत हो जाएं।

दूसरा मैंने ये सूना कि यहाँ पर गाना गाते लोगों के बदन में शरीर हिलने लग जाता है। कहते हैं देवी आती है। ये गलतफहमी है बहुत बड़ी। देवी किसी के बदन में नहीं आ सकती। बहुत मुश्किल। देवी का काम करना आसान है? देवी के अन्दर तो हजारों चक्र होते हैं। उन चक्रों को संभालना, उनको ठीक से उसका चलाना, उसमें से ठंडी ठंडी लहरें बहाना, लोगों का भला करना और ऐसे इंसान का चरित्र भी तो उज्ज्वल होना चाहिए। हमारे बम्बई में जितनी नौकरानियाँ हैं, शराब पीती हैं, सब ढंग करती हैं, उनके बदन में आती हैं देवी। बताओ, ऐसे कोई देवी कोई पागल है किसी के अन्दर भी आने के लिए। देवी तो एक शुद्ध चित्त में ही आ सकती है। और फिर वो देवी आकर बताती भी क्या है कि 'तुम उसको मार डालो तो अच्छा होगा। घोड़े का नम्बर क्या है। फलाना क्या है, मटका खेलने का नम्बर क्या है। ऐसा कभी देवी बता सकती है? देवी तो हमेशा ऊंची बात करेगी, परमात्मा की बात करेगी, अच्छी बात करेगी। ऐसी गंदी बातें तो नहीं करने वाली। ये जब आप देखते हैं तब भी आप ऐसी औरत के पैर पर आते हैं। ये तो भूत है। ये तो भूत हैं, जो इन औरतों के अन्दर आ जाते हैं और वो बोलने लग जाती हैं और आप उनको मानने लग जाती हैं। ये जरूर है कि भूत को कुछ-कुछ बातें मालूम होती हैं, वो बता देता है। लेकिन उसमें क्या रखा है? इन सब चीज़ों में क्या

रखा हुआ है? उसकी ओर जाने से और नुकसान ही होने वाला है। अगर आज आप भूत के यहाँ गये, तो कल वो आपको पकड़ जाएगा। आपका खानदान खा जाएगा। ऐसी औरतों को दरवाजे में आने नहीं देना चाहिए। उनके घर खाना नहीं खाना चाहिए। बिल्कुल दूर रखना चाहिए, क्योंकि वो बाधित लोग हैं, उनसे बीमारियाँ होती हैं गंदी। जिस औरत के बदन में भूत आता है उसको चाहिए कि वो अपना इलाज करा ले और ठीक हो जाए। अन्त में पागल होकर ही मरती है। ऐसी सब औरतें पागल हो जाती हैं, पागल खाने में जाकर मरती हैं। आप लोग सब जानते हैं जो आपके यहाँ के बूढ़े हैं, उनसे पूछ लीजिए ऐसा होता है या नहीं। तो इस तरह की औरतों के पास या आदमियों के पास जाने की जरूरत नहीं, जिनके बदन में भूत आते हैं। इनको कहते हैं देव आ गये। और ऐसे आदमी लोग भी बहुत सारे होते हैं, जिनके अन्दर में भूत आ जाते हैं और खूब नाचने लग जाते हैं, अजीब-अजीब सी बातें करते हैं और मुँह से मिट्टी का तेल रख के ऐसे आग जलाते हैं और नीबू लगाते हैं, पता नहीं क्या-क्या तमाशे करते हैं। और लोग उस तमाशे पर ही ये हो जाते हैं।

तमाशा हो तो ठीक है, लेकिन ये तमाशा नहीं है। इसके पीछे में बड़ी जहरीली चीज़ है। ये साँप और नाग से भी बदतर लोग हैं। क्योंकि ये अगर आपको डस गये तो गये आप काम से। उससे आप बच नहीं सकते। इसलिये इन लोगों से आप दूर रहिये। इतना ही ज्ञान आपके लिए काफ़ी है। बाकी आप बिल्कुल ठीक हैं। आपमें और कोई दोष नहीं। और किसी दोष को मैं नहीं देखती हूँ। सिर्फ यही देखती हूँ कि अज्ञान में, अंधकार में आप गलत लोगों के पीछे में कभी-कभी चले जाते हैं। जो जितना नाटक करता है उतना उससे दूर रहिए।

परमात्मा कोई नाटक नहीं है। वो असलियत है। वास्तविकता है। कोई नाटक या झूठ से नहीं होता। अभी तक आपको अनुभव नहीं था, तो अनुभव हम आपको दे देते हैं। अनुभव शून्य होने की वजह से आप जानते नहीं कि कौन अच्छा है, बुरा है। अब आप अनुभव पाएंगे तो आप जानेंगे।

अब कोई अगर आपसे पूछे कि भई, तुम नैना देवी को मानते हो, तुम चिंतपूर्णी को मानते हो, क्यों? वो तो एक पत्थर मात्र है। उसको क्यों मानते हो? क्या जवाब है आपके पास? कोई जवाब नहीं कि क्यों मानते हो? शंकर जी को मानते हो?शंकर जी के बारह ज्योतिर्लिंग है। क्यों? बारह ही क्यों है? क्या बात है? आपको पूछना चाहिए कि क्यों भई कैसे क्या? कैसे जाना? जो बड़े-बड़े फकीर हो गए, बड़े-बड़े ऊँचे पहुँचे हुए, जो बड़े-बड़े मुनि ऋषिगण लोग अपने यहाँ हो गए, उनके अन्दर चैतन्य की लहरियाँ थी। उन्होंने इस चैतन्य को महसूस किया और कहा कि ये तो पृथ्वी तत्त्व ने निकाली हुई चीज़ है। ये तो बाईबल में भी लिखा है, कि पृथ्वी तत्त्व में से निकली हुई चीज़ - स्वयम्भू। ये स्वयम्भू चीज़ निकली है। पर अब वो स्वयम्भू की कोई भी मूर्ति बनाए, फिर कोई भी

गंदा आदमी और भी मूर्तियाँ बनाकर उसको बेचे, महंगा करे, ये सब चीज़ें परमात्मा की नहीं होती। जो स्वयम्भू चीज़ है, जिसमें से चैतन्य बह रहा है, वो सिर्फ एक फकीर बता सकता है।

इसका एक उदाहरण बताएं। एक बार हम, एक जगह है, जिसको कि राहुरी कहते हैं, जहाँ पर कि हमारे पूर्वज राज करते थे, वहाँ पर गए थे। वहाँ किसी ने बताया कि माँ, यहाँ एक बड़ी अजीब सी जगह है। यहाँ पर एक अंग्रेज था पचास साल पहले। तो वो यहाँ पर एक बाँध बना रहा था। जब बाँध डाल रहा था तो उसने देखा कि एक जगह ऐसी है-करीबन सौ फुट की जगह ऐसी-कि वहाँ कुछ भी करिए आप खोद ही नहीं सकते। और वहाँ आप कुछ बनाइये तो वो ढह जाता है। रात में ढह जाए और सबेरे जो है फिर वो लोग बनाए, फिर वो रात में ढह जाए। तो होता क्या है कि कुछ समझ में नही आ रहा? बड़ी चमत्कार की चीज़ है। तो एक फकीर ने आकर कहा, 'इसे छोड़ दो, ये माँ का स्थान है, इसको नहीं छूना तुम।' उन्होंने कहा, इसको कैसे मालूम? उसने कहा, 'जो भी है, मैं कह रहा हूँ, कि इससे अलग हट जाओ।' तो आप देखिए कि बाँध ऐसा सीधा बनना चाहिए तो उस जगह बाँध ऐसा बना हुआ है। तो मैं वहाँ गयी। मैंने कहा ये तो सारा सहस्रार है। उन्होंने कहा, कैसे? मैंने कहा, चलो, तुम लोग तो सब पार हो। देखो इसमें से ठंडक आ रही है। ऐसी ठंडी-ठंडी लहरें बदन पर आने लग गईं। अब जितने ज्योतिर्लिंग हैं, उसमें से ऐसी बात है। अब आप जाईये, जब आप कुण्डलिनी जागरण के बाद आप जाइये कहीं, वैष्णोदेवी जाईये और जाकर देखिये। पूछिए, 'आप साक्षात वैष्णों देवी है?' उनके अन्दर ठंडी-ठंडी हवा आनी शुरू हो जाएगी। तो असल है कि नकल है, ये पहचान आ जाती है।

कोई आदमी अगर आपके सामने ऐसा वैसा आ जाए तो आप फौरन जान लीजिएगा। उससे गरम-गरम हवा आएगी। नहीं आएगी तो हाथ में कभी कभी फोड़े आ जाते हैं, कुछ ऐसे दुष्ट आदमियों से जो दुष्ट होते हैं, वो फौरन आपको पता चल जाएंगे। आपको किसी से पूछना नहीं पड़ेगा। आप फौरन कहेंगे कि 'इस आदमी से मेरा कोई मतलब नहीं, जाइये।' साफ कह देंगे।

अब अन्दर बाहर जानने का एक ही तरीका है कि आपके अन्दर प्रकाश आ जाए और प्रकाश इस कुण्डलिनी से आता है, जो छः चक्रों को छेदती है, जिसको 'षटचक्र भेदन' कहते हैं। ये चक्र जब छिद जाते हैं तो एक तरफ तो हमारी तन्दुरुस्ती अच्छी हो जाती है और दूसरे तरफ हमारा मन शान्त हो जाता है। और तीसरी तरफ हमें आत्मा की प्राप्ति हो जाती है। आत्मा जो है सच्चिदानन्द है। माने आप इस चेतन अवस्था में सत्य को जान सकते हैं। अभी तक तो आपको सत्य-असत्य का फर्क ही नहीं मालूम। अब मैं भी सत्य हूँ या असत्य हूँ आप क्या जानिएगा? जब तक आपके अन्दर चैतन्य की लहरियाँ नहीं आएगी तब तक आप क्या जानिएगा कि मैं क्या हूँ?

उसी प्रकार आप इसको चित्त कहिए कि आपका चित्त जो है वो प्रकाशित हो जाता है। जैसे यहाँ आप बैठे-बैठे आप किसी के बारे में सोचें और एकदम यहाँ पर समझ लो जलन आ गयी, माने क्या? हमारे यहाँ लंदन में जब पहले एक साहब पार हुए तो वहाँ के लोग शक्की ज़्यादा हैं, आप लोग जैसे भक्ति तो उनमें हैं, शक्की हैं, ज्यादातर शक्की लोग होते हैं। उनको समझता तो कुछ भी नहीं, देवी वगैरेह। उनसे तो गणपति का 'ग' से शुरू करना पड़ता है। तो उनके यहाँ चमक आ गयी। तो कहने लगे, 'माँ यहाँ क्यों चमक आ रही है? मैंने अपने पिता के लिए पूछा था सवाल।' मैंने कहा, 'ये आपके पिता के चक्र हैं और हो सकता है कि उनको बड़ा बुरा अस्थमा, गले में शिकायत हो गयी, क्योंकि ये विशुद्धि चक्र है।' तो कहा, 'अच्छा, मैं अभी फोन करता हूँ।' स्काटलैंड में फोन किया तो उनकी अम्मा ने यही कहा कि, 'तुम्हारे पिताजी को बहुत बुरा अस्थमा हो गया है और बीमार पड़े हैं।' उसने कहा कि, 'अच्छा!' तो अब कहले लगे, 'माँ, इसका निदान क्या है? और अब इसको कैसे ठीक किया जाए।' 'तो निदान तो हो गया,' मैंने कहा, 'अब इसको ठीक करने का तरीका हम तुम्हें बताते हैं कि तुम इसको किस तरह से कवच दो।' जैसे ही उन्होंने कवच दिया आधे घंटे में उनकी अम्मा का फोन आया कि, 'पता नहीं क्या हुआ तुम्हारे पिताजी का बुखार उतर गया है और दौड़ रहे हैं। वो तो बाहर चले गए।' इस प्रकार ये चीज़ घटित होती है।

तो जो चित्त है वो आलोकित हो जाता है। चित्त में प्रकाश आ जाता है। आप जिसके भी बारे में सोचेंगे, जो भी करना चाहेंगे उसके बारे में आप यहाँ बैठे-बैठे जानेंगे। अब देखिए आपने सुना होगा कि रेडियो होता है, टेलीविजन होता है, कहाँ पर प्रोग्राम होता है, यहाँ सुनाई देता है। उसी प्रकार परमात्मा की 'अनन्त' ऐसी किरणें हैं ऐसा उनका जाल फैला हुआ है, 'हजारों' उनके हाथ हैं, उसी से कार्य होता है। पर पहले उनके राज्य में तो उतरिए। उनके साम्राज्य में तो आईये। अगर आप उनके राज्य में नहीं बैठे हैं, आप तो दूसरों के राज्य में बैठे हैं तो वो ही आपकी परवाह करें। जब आप परमात्मा के राज्य में आएंगे तब आपका पूरा इन्तजाम है वहाँ। सारे उनके देवदूत, गण आदि सारे आपकी सेवा में खड़े हुए हैं। सबके सब वहाँ पर पूरी तरह से आपकी व्यवस्था करेंगे और हर आपके प्रश्न जो हैं उसके हल इस तरह आपको मिलेंगे कि आप हैरान हो जाईयेगा कि ये कैसे हो गया। ये माँ हमें कैसे प्राप्त हुआ।

अनेक ऐसे उदाहरण हैं, अनेक ऐसे उदाहरण सहजयोग में देखे गये कि जिसका उत्तर कोई भी नहीं दे पाया। बहुत बार कहीं हम बैठे हुए हैं। आकाश से एकदम देखते हैं कि प्रकाश की ज्योत की ज्योत आ रही है। वो कैमेरा में पकड़ आ जाता है। कहीं कुछ कहीं कुछ। एक बार हम बैडफर्ड में थे। ये तो वहाँ के पेपरों ने भी छापा कि बैडफर्ड में हम गए थे। हम तो लेक्चर दे रहे थे, काफ़ी लोग थे।

उस वक्त कोई नौ बजे के करीब, या आठ बजे के करीब कोई लड़का ऊपर से नीचे गिर पड़ा। अस्सी फुट नीचे गिरा। उसके पास मोटर साइकिल थी। पुलिया पर से जब गिरा तो लोगों ने, पुलिया पर के लोगों ने एम्बुलेन्स मंगवाई। जब तक एम्बुलेन्स आयी, लड़का चढ़ के ऊपर चला आया। लोगों ने पूछा, 'भई तुम ऊपर कैसे चढ़ आए?' तो उसने कहा, 'वो पता नहीं मुझे। एक आयीं थी। उन्होंने मुझे ठीक कर दिया।' तो उन्होंने सोचा ये पागल हो गया है कि क्या? तो उसको अस्पताल ले गये। वहाँ पुलिस आयी। उसने पुलिस से बताया, मेरी बात मानिए, एक स्त्री थी, वो एक सफ़ेद मोटर में आयी। (हमारी सफ़ेद मोटर है)। और सफ़ेद साड़ी पहनी हुई थी और एक हिन्दुस्तानी स्त्री थी। उसने आकर के और मुझ पर हाथ फेरा। इससे मैं ठीक हो गया।' तो उन्होंने कहा कि, 'भई, ऐसे तो कोई आया नहीं, हम तो पुलिया पर खड़े देख रहे थे, और ये तो ऊपर चढ़ा आया।' कहा कि, 'नहीं, हुआ तो सही। ये तो बात है क्योंकि इसको तो कोई चोट वोट है नहीं। दूसरे दिन उन्होंने हमारा फोटो देखा, तो बताया 'यही तो वो स्त्री थी जिसने हमें बचाया।' तो पूछा कि, 'तुमने किया क्या?' कहने लगा, 'बस, जिस वक्त मैं गिरने लगा, तो मैंने यही कहा कि, हे पावन माँ, मुझे तुम बचाओ। बस, इतना मैंने कहा। मैंने उसको याद किया सिर्फ और कुछ नहीं। और जैसे मैं गिरा उसके बाद पता नहीं कैसे, ये एकदम आ गयीं, इन्होंने ऐसे हाथ किया। मैंने गाड़ी को आते देखा और उससे उतरते देखा और झट से नीचे आयीं और आकर के मुझे ठीक भी कर दिया।' ये उन्होंने साफ कहा, तो वो लोग परेशान हो गए। उन्होंने चिट्ठियाँ लिखीं। उन्होंने कहा कि, 'ये कैसे क्या हो गया?' तो उन्होंने कहा कि, 'ऐसे तो बहुत किस्से इंडिया में हुए हैं, लेकिन अब इंग्लैंड में भी हो रहे हैं। क्योंकि जब, जिसके हजारों हाथ हैं, जिसके हजारों शक्तियाँ हैं, उसके लिए क्या विशेष बात है।'

अगर हम कुछ हैं भी तो उसमें कौन सी विशेष बात है। अगर सूर्य है, तो है, उसमें कौन सी उसकी बात है। क्योंकि उसके अन्दर ये शक्ति है ही। जो है सो है। उसमें कौन सी विशेष बात है। लेकिन आपकी विशेष बात है, कि आप इंसान से बढ़कर आज परमात्मा के दरवाजे आए हैं। और ये ही नहीं आज आप इंसान से भी ऊँचे उठ करके अति मानव होने वाले हैं। आप एक आत्मबोध पाने वाले इंसान होने वाले हैं। ये आपकी विशेषता है। ये आपका बड़प्पन है। इसलिए मैंने सबसे पहले आप सबको प्रणाम किया था। इसलिए मैंने कहा था कि आप सबको मेरा प्रणाम!

अब हम लोग थोड़ी देर में कुण्डलिनी जागरण का प्रयोग करेंगे।

चैतन्य लहरियाँ क्या हैं?

२७.३.१९७४, मुंबई

इस प्रेम की शक्ति को अगर अपनाना है, तो एक चीज़ जरूर होना चाहिए जिसको अबोधिता कहते है, innocence। आदमी में अगर innocence नहीं हो तो 'कुण्डलिनी माताजी उठती नहीं है।' आप उपर से बड़े शरीफ़ आदमी होंगे, दुनिया में आपका बड़ा नाम होगा। आपके बहुत बड़े फोटो छपे होंगे। या आप बड़े भारी साधु महात्मा होंगे। आपको सब लोग भगवान कह कर पूजते होंगे लेकिन 'कुण्डलिनी माता जो है वो उठनेवाली नहीं। क्या करें हम?' उसने तो द्वार पर गणेशजी को बैठाया हुआ है। वो स्वयं innocence ही है। या मैं इतना ही कहूँगी कि ये जो vibrations है ये क्या है-ये innocence है। आदमी को थोड़े innocence की जरूरत है। लोग तो हमें पूछते है,''माताजी, क्या करना चाहिए?'' मैंने कहा कुछ नहीं, बस आपमें innocence जितना है, उसको जरा नाप लीजिए। अगर उसको आप तौल लेंगे तो पता चलेगा कि innocence कितना है और चालाकी कितनी। उसका नापतौल थोड़ा सा हो जाये और आप ही की भलाई के लिए है न आपका Bank Balance। आप हमेशा अपना Bank Balance साथ लेते हैं कि कितना है और कितना नहीं और उसी के अनुसार कार्यप्रवण होते हैं और उसी के अनुसार आप में अहंकार आदि आते हैं। और सहजयोग में जितना आपका innocence जुटा होगा वो cash होगा खट से। ऐसे ऐसे लोग जो देखते ही साथ खट से पार हो जाते है। और चार-चार साल से भी लोग रगड़ रहे हैं, ऐसी कोई बात नहीं की आप बूरे आदमी है। बुरा तो कोई भी मैने देखा नहीं खास। यहाँ पर कोई बुरे आदमी थोडे ही है। लेकिन एक बात है, वहाँ थोडी चालाकी तो है। चालाकी से परमात्मा को नहीं जाना जाएगा। चालाकी से परमात्मा को नहीं जाना जाएगा। चालाकी मनुष्य की quality है। अपने innocence को नाप लें। अब इसका कोई नाप नहीं होता, कोई मापदण्ड नहीं, आप ही अपना जान सकते है और कोई नहीं जान सकता। इसलिए छोटे बच्चे खट से पार हो जाते है और पार होने के बाद में खुद ही खड़े होकर कहते है, 'हाँ माँ आ रहा है।' अब इनको ठंडा आ रहा है और इनको गरम आ रहा है। हमारे यहाँ हमारी नाती है, दो साल की है। कोई ऐसा वैसा आ जाए तो घंटी बजाने लगती है। फौरन घंटी बजाने लगती है। एक घण्टी ले रखी है कि ये आ गये फौरन जान जाती है क्योंकि उनको गर्मी होती है, तकलीफ होती है।

इसके बारे में आपको उन्होंने गाना सुनाया था। बहुत बड़ी थी वो। संसार में आये ही। संसार का कल्याण करने के लिए। उनके बिचारों के जल जल के हाथ अन्दर चले गए, पैर जल जल के अन्दर चले गए। ऐसे लोगों को तकलीफ होती है, राक्षसों के देख के। ये innocent लोग है। Christ जैसे आदमी को crucify कर दिया, मोहम्मद साहब जैसे आदमी को murder कर दिया। किसको नहीं सताया इन दुष्टों ने। आप उनके साथ है या अपने innocence के साथ है।

आप अपने बच्चों के लिए कम से कम सोचिए। उनके लिए आप क्या देना चाहते हैं। कौन सी दुनिया उनके लिए आप बना कर के जा रहे हैं। उनके लिए कौन सा विधान आपने सोचा हुआ है। या तो इतिहास से यही जाना जाएगा कि आप ही समय में सहजयोग आया था और आप लोगों ने उसे अपनाया नहीं। जब कि आपको कुछ भी देना नहीं है। आप दे ही नहीं सकते हैं हमे तो। आप लोग उसी नियम पर बैठे हैं। आप हमें क्या दीजिएगा।

जिव्हा की शक्ति

..... ये चीज़ से जबान पर चढ़ जाती है गाली। उसका नुकसान भी बहुत हो जाता है कि जिव्हा में शान्ति नष्ट हो जाती है। जिव्हा का आदर न होने से आप जो बोलते है वह झूठ होगा। जो आदमी मुँह से गाली नहीं देता है उसकी जिव्हा में शक्ति होती है। आपने बहुत बार देखा होगा, कि भाषण करते-करते अगर कुछ कहना भी होता है, तो मैं ठिठक जाती हूँ कि कहीं ऐसा न हो कि, जो बाते जैसे ईसा मसीह ने कही थी, कि सूअर के आगे मोती नहीं डालना चाहिए। लेकिन अंग्रेजी में सूअर शब्द जो है एक गाली है और बहुत बुरी गाली है।

..... इस तरह से जहाँ जहाँ जिस तरह का व्यवहार होता है, उसकी मर्यादा रखते हुए आदमी को रहना चाहिए, नहीं तो जिव्हा की शक्ति, जो सरस्वती की शक्ति है, वो नष्ट हो जाती है। भाषण में भी वाचालता, जिसे वाचालता कहते है, तो वाचालता के साथ अश्लीलता तो बहुत बुरी चीज़ है। हम लोग सुबोध घराने के लोग है और सुबोध घराने के लोगों में एक तरह की सभ्यता, शिष्टाचार होना चाहिए। और उस सभ्यता को लेकर के हम लोगों को गाली गलोच की बात नहीं करनी चाहिए। अब बहुतों ने कहा, कि होली के दिन भंग पीने में क्या हर्ज है माँ? कोई हर्ज तो नहीं। ऐसा कोई हर्ज नहीं है, लेकिन भंग पीने से पागल तो नहीं हो जाता। अगर आप हमें भंग पीने को कहे तो हम तो भंग नहीं पीएंगे। तो बात यह है, कि भंग वंग पीने की सहजयोगियों को कोई जरूरत नहीं। जब चाहे तब मन में ही भंग पी ली। भंग का जो उपयोग है लेफ्ट साइड में जाने का, वह हम लोग ऐसे ही करते है। मतलब यह है, कि अगर कोई आदमी बड़ा ही अहंकारी है, बहुत शुष्क है, गम्भीर है, तो उसके लिए सहजयोग में पूर्ण व्यवस्था है, कि वह अपने आज्ञा चक्र को ठीक कर ले। आज्ञा चक्र को अगर वह किसी तरह से खुलवा ले, अपने ही आज्ञा चक्र को अगर वो ठीक कराले तो वह लेफ्ट साइड में जा सकता है। निद्रा के समय अगर आप आज्ञा चक्र को घुमाकर सो जायें, तो अच्छी निद्रा आती है। और अगर उसको फिर भंग की दशा से निकलना है, तो फिर आज्ञा चक्र को कस ले तो फिर राइट साइड में आ सकता है।

..... कोई सा भी कार्य ऐसा नहीं करना चाहिए, जो गन्दा हो, जिसमें सभ्यता में सुंदरता न हो। सभ्य तरीके से काम करना है। छोटी-छोटी चीज़े आपके अन्दर आ जाती है। उसकी मर्यादा, जैसे कल आर्टिस्ट लोग बजा रहे थे, उस वक्त किसी को उठना नहीं चाहिए, किसी कला का मान करना चाहिए। आपने बहुत बार देखा होगा, कि जब कोई आर्टिस्ट बजाता है, तो मैं खुद जमीन पर बैठती हूँ, क्योंकि आप भी सीखे। मान-पान किसका करना चाहिए, यह सहजयोगियों को बहुत आना चाहिए, क्योंकि प्रोटोकॉल की बात है। आर्टिस्ट लोग भी, देखिये पैर पर हमेशा, ये परम्परा है, पैर पर हमेशा शॉल रख कर के बजाएंगे, अगर असली आर्टिस्ट होंगे। क्योंकि हो सकता है कि श्रोतागण में कोई बैठे हो देव-देवता और मेरे पैर न दिखाई

दे। अपने देश की इतनी बारीक-बारीक चीज़ें हैं कि मैं आपको क्या बताऊँ? इतना सुन्दर अपने देश में बना हुआ है। इतना सुन्दर परमात्मा का, कहना चाहिए कि अंगवस्त्र है, कि इतनी गहनता है उसकी बनावट में, इतनी काव्यमय में है सारी चीज़, बहुत ही सुन्दर! काव्यमय! लेकिन हम लोग उसे नहीं समझ पाते और उसे अपने जीवन में नहीं ला पाते, तो सबसे गलती हो जाती है।

..... अब तो लीला का समय है। लीलामय बनना चाहिए और इसलिए उन्होंने सारे संसार को लीला का ही पाठ पढाया। लीला का मतलब कभी भी अश्लीलता या अपनी मर्यादाओं से गिरना, अपनी परम्पराओं से उतरना या अपनी जो प्राचीन धारणायें बहुत सुन्दर अभी तक बनी हुई है, उनको छोड़ना, ये नहीं है। हाँ, रूढी आदि जो गन्दी चीज़ें हैं उन्हें छोड़ देना चाहिए। लेकिन जो पवित्रता की भावनायें आपस में रिश्तेदारी की है, उसमें पूरी तरह से सहजयोग में हम लोग है और उसमें आगे बढ़ना चाहिए। भाई-बहन के रिश्ते, अब कल हमारे भाई साहब आये थे। बस देखा उन्होंने कि हमारी बहन, उनकी आँखों से आँसू ही बहे जा रहे थे। मैं देख रही थी, कि वे बार-बार आँसू पोंछ रहे थे। वो कुछ और नहीं सोच सकते। सो, यह जो पवित्रता की भावना है, प्रेम की भावना है, इसमें आदमी को चाहिए कि सहजयोग की दृष्टि से विचार करे। सहजयोग की दृष्टि से जो शोभायमान है। कोई सा भी व्यवहार हो, जो अशाोभनीय है, छोटी-छोटी बात पर बात करना, छोटी-छोटी बातों में उलझना, बेकार में आपस में झगड़े करना, किसी भी चीज़ की माँग करते रहना, कि यह चाहिए, वह चाहिए या कोई भी इस तरह की बात करना, ओछापन है। और ऐसे लोग सहजयोग में नहीं जम सकते।

नई दिल्ली, २९.३.१९८३

..... खाने-पीने को हम बहुत महत्व देते हैं। किसी को चाट कहाँ अच्छी मिलती है, मिठाई यहाँ अच्छी मिलती है, यहाँ ये, सारा चित्त इन्ही चीज़ों में लगा रहता है। आस्वाद होना चाहिए। ये या वो। कहते है, श्रीकृष्ण को लड्डू ज्यादा पसंद है और देवी को पूरण पोली। अब आप लोग भी मेरे लिए कुछ-कुछ बनाकर लाते हो, लेकिन मुझे इन सब चीज़ों से कोई मतलब नहीं। आस्वाद होना चाहिए। आस्वाद में उतरना चाहिए। अब आप लोग इतने प्यार से मेरे लिए चीज़े बनाकर लाते हो इसलिए मैं वो खा लेती हूँ। वो बात अलग है। हाँ, दूसरों को बनवाकर खिलाओ। ज़्यादा तर उत्तरी भारत में लोगों का खाने में ज़्यादा ध्यान है, फिर महाराष्ट्र में भी है और दक्षिण भारत में भी है। वैसे सभी जगह है। हमें लोग पूछते हैं, आपको क्या पसंद है? हमें तो याद भी नहीं आता कि हमें क्या अच्छा लगता है।

१७.३.१९९५

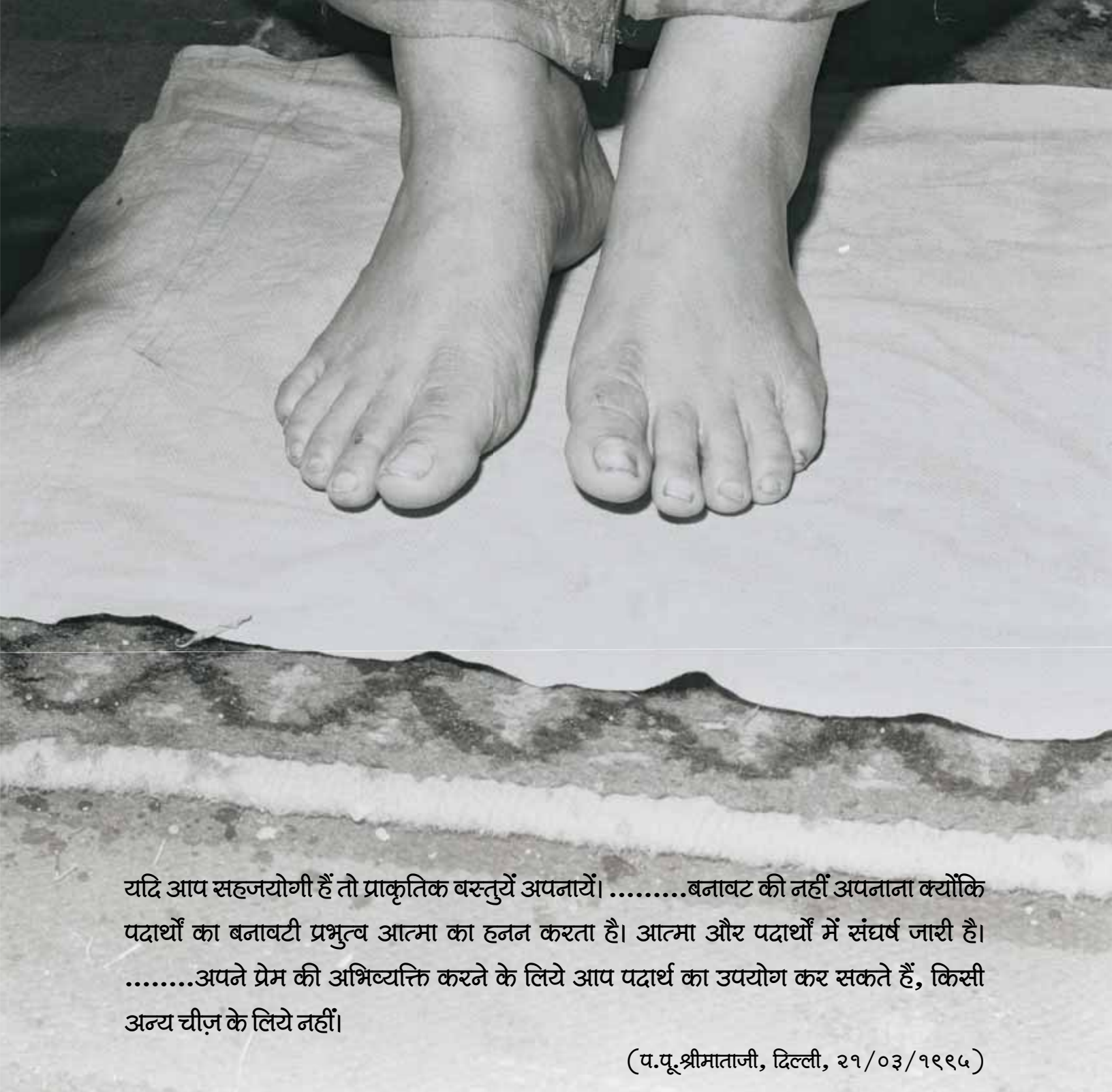

यदि आप सहजयोगी हैं तो प्राकृतिक वस्तुयें अपनायें। .....बनावट की नहीं अपनाना क्योंकि पदार्थों का बनावटी प्रभुत्व आत्मा का हनन करता है। आत्मा और पदार्थों में संघर्ष जारी है। .....अपने प्रेम की अभिव्यक्ति करने के लिये आप पदार्थ का उपयोग कर सकते हैं, किसी अन्य चीज़ के लिये नहीं।

(प.पू.श्रीमाताजी, दिल्ली, २१/०३/१९९५)

✦ प्रकाशक ✦

निर्मल ट्रैन्सफर्मेशन प्रा. लि.

प्लॉट नं.१०, भाग्यचिंतामणी हाउसिंग सोसाइटी, पौड रोड, कोथरुड, पुणे - ४११ ०३८.

फोन : ०२०-२५२८६५३७, ६५२२६०३१, ६५२२६०३२, e-mail : sale@nitl.co.in, website : www.nitl.co.in

जो आँखे अबोध हैं वे बाहर से कुछ नहीं लेती, वे केवल देती हैं। पावनता कहीं भी प्रवेश कर सकती है, अत्यन्त पावनी है, सुखद है और अत्यन्त सुन्दर है। हमें सुन्दर व्यक्ति बनना होगा।

– प.पू.श्री माताजी, लंदन, १५.८.१९८२